वेदों की
ओर
लौटो।

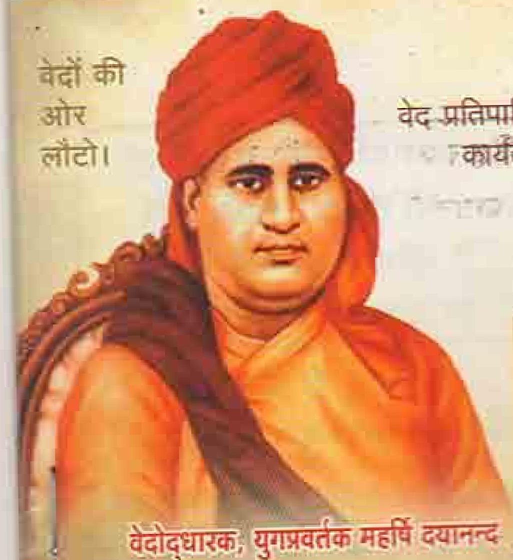

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक १० १० अक्टूबर २०१७

१३४ वें बलिदान दिवसपर
युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को
शतशः वन्दन व भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व
प्रधान **श्री गंगाप्रसादजी आर्य**
मेघालय राज्य के
नये राज्यपाल निर्वाचित।

आर्यजगत् की ओर से
हार्दिक अभिनन्दन व बधाई ×

राज्यपाल श्री आर्यजी का अभिनन्दन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य।

शपथ ग्रहण करने से पूर्व मेघालय के निर्वाचित राज्यपाल श्री गंगाप्रसादजी आर्य शिलाँग में सपरिवार यज्ञ करते हुए। साथ में हैं पुरोहित पं.आचार्य राहुलदेवजी एवं अन्य।

संस्कृत दिवस

परली में आयोजित सामूहिक संस्कृत दिवस पर मार्गदर्शन करते हुए मराठवाडा शिक्षक संघ के अध्यक्ष श्री पी.एस.घाडगे। मंच पर विराजमान हैं आर्यकार्यकर्ता व विद्वान् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १९४ | अश्विन/कार्तिक | १० अक्टूबर २०१७

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२२९५५४५)	(९४२१९५११९०४)	(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: **प्रा.देवदत्त तुंगार**(९३७२५४१७७७) **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६), **प्रा.सत्यकाम पाठक**(९९७०५६२३५६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४
२) सम्पादकीय ५
३) पू.श्रद्धानन्दजी(ह.गुरुजी) जन्मशताब्दी-सूचना ६
४) दक्षिण में आर्यों की बलिदान परम्परा ७
५) क्या राजाश्रय से धर्म बढता है?........ १२
६) समाचार दर्पण १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) दीपावली आणि देव दयानंद २०
३) प्रभुवंदना (काव्यसुधा) २४
४) ÷गूंज उठी' गुंजोटी २५
५) मृत्युंजयी व्हा, मरणाला जिंका × २९
६) वार्ताविशेष ३१
७) शोकवार्ता ३४

✻ प्रकाशक ✻
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

ब्रह्म व क्षात्रतेज की वृद्धि हो

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।

मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा।। (यजु.२३/१६)

पदार्थान्वय– हे परमेश्वर × आपकी कृपा और हे विद्वन्× तेरे पुरुषार्थ से **(स्वाहा)** सत्याचरणरूप क्रिया से **(मे)** मेरे **(इदम्)** ये **(ब्रह्म)** वेद, ईश्वर का विज्ञान वा इनका ज्ञाता पुरुष **(च)** और**(क्षत्रम्)** राज्य, धनुर्वेदविद्या और क्षत्रिय कुल**(च)** भी ये **(उभे)** दोनों **(श्रियम्)** राज्य की लक्ष्मी की **(अश्नुताम्)** प्राप्त हो, जैसे **(देवा:)** विद्वान लोग **(मयि)** मेरे निमित्त**(उत्तमाम्)** अतिश्रेष्ठ**(श्रियम्)** शोभा वा लक्ष्मी को **(दधतु)** धारण करें, हे जिज्ञासु जन× **(ते)** तेरे लिये भी**(तस्यै)** उस श्री के अर्थ हम लोग प्रयत्न करें।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञापालन और विद्वानों की सेवा-सत्कार से सब मनुष्यों के बीच से ब्राह्मण, क्षत्रिय को सुंदर शिक्षा, विद्यादि सद्गुणों से संयुक्त और सबकी उन्नति का विधान कर अपने आत्मा के तुल्य सब में वर्तें, वे सब को पूजने योग्य होवें ।

-० आर्य जगत् के आगामी कार्यक्रम ०-

*** देश-विदेश में सर्वत्र दि.१९ अक्टूबर २०१७ को वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३४ वां निर्वाणोत्सव व दीपावली पर्व मनाया जायेगा× इस उपलक्ष्य में सभी आर्य समाजों व आर्य संस्थानों में प्रात: यज्ञ, भजन, प्रवचन, सत्संग कार्यक्रम होंगें ।**

*** दि.२२ से २९ अक्टूबर २०१७ को आर्य साधक आश्रम, रोजड में क्रियात्मक ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन।**

*** दि.२७, २८ व २९ अक्टूबर २०१७ को अजमेर के ऋषि उद्यान में म.दयानन्द का १३४ वां बलिदान समारोह व विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।**

संपादकीयम् दयानन्द के हम अनुयायी ...?

संसार से विदा होकर म.दयानन्द को आज १३४ वर्ष हो गये। एक ऐसे अनमोल रत्न को खोकर भारत ने समूचे विश्व के समुज्ज्वल भविष्य को युगो-युगों तक अन्धःकार में ढकेल दिया, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती × मानवता के सजग प्रहरी व वेदज्ञान दैदीप्यमान नक्षत्रसम उस दिव्यात्मज्योति के अकस्मात् बुझ जाने से ईश्वरीय सृष्टिव्यवस्था का कितना नुकसान हो गया, कह नहीं सकते। महर्षि के बाद उनके अनुयायी-सत्पुरुषों ने उनके पदचिन्हों पर चलकर वेदज्ञान की रक्षा में अपना सर्वस्व लगाया। साहित्यसृजन, वेदप्रचार, गुरुकुलीय शिक्षाप्रसार, सामाजिक सेवा आदि के माध्यम से दयानन्द की विचारवाटिका को हरीभरी रखने में उन्होंने पूरा योगदान दिया। यह कार्य आज भी यथाशक्ति विद्वानों व कार्यकर्ताओं द्वारा हो रहा है। इसी कारण तो यह विचार आज भी जीवित है।

स्वामीजी अपने पीछे ÷आर्य समाज' नामक एक ऐसा संगठन छोड गये, जिसका सम्पूर्ण उद्देश्य विश्व में मानवीय मूल्याधारित व्यवस्था की स्थापना करना था। इसके दस नियमों व मन्तव्यों में संसार के हर एक समस्या का स्थायी समाधान निहित है । देश, काल व परिस्थिति कोई भी क्यों न हो, आर्य समाज के सिद्धान्त पूरी तरह से खरे उतरते हैं। इस विचारधारा में इतना सामर्थ्य है कि जिसके सामने संसार को कोई भी सम्प्रदाय या अन्य विचार टिक नहीं पातें। दुर्भाग्य यह है कि स्वामीजी द्वारा प्रतिपादित ईश्वरीय वेदविधान समझने में संसार आज पूर्णतः विफल हो चुका है। जैसे-जैसे समय बीत रहा है, वैसे-वैसे महर्षि के अनुयायी भी उनके विचारों से मनसा-वाचा-कर्मणा दूर जाते दीखाई दे रहे हैं। देश व समग्र विश्व में अनेकविध समस्याएँ पहले से अधिक मात्रा में विकराल रूप धारण कर रही हैं। तब इनका स्थायी समाधान जब दयानंद के विचारों में समाहित है, तब क्या कारण है कि हम उनका निराकरण करने में सफल नहीं हो रहे हैं? किसी भी संस्था या संगठन की प्राणशक्ति उनके अनुयायी कार्यकर्ता ही होते हैं। आज भी कई संगठनों के कार्यकर्त्ता त्याग, समर्पण व निष्ठा के साथ अपने सिद्धान्तों पर दृढ है। पूरा समय वे अपनी लक्ष्यपूर्ती में संलग्न हैं, भले ही उनके विचार अधुरे क्यों न हो ? लेकिन चिन्तन का विषय कि महर्षि के अनुयायी हम आर्यजन आज अपने मन्तव्यों पर कितने दृढ हैं? अन्य अवैदिक विचारों से समझौता न करते हुए वेद के सिद्धान्त हमारे जीवन में कितनी मात्रा में खरे उतरे हैं ? इस पर सोचने की आवश्यकता है। स्वामीजी के निर्वाण दिवस पर हम प्रण करें कि वैदिक विचारपरम्परा को तन-मन-धन से अपनाने व उन्हें सर्वदूर प्रचारित करने में अपना पूरा योगदान दे, तभी हम महर्षि के सच्चे अनुयायी कहलाने अधिकारी होंगें, अन्यथा...×

- नयनकुमार आचार्य

आर्य जगत् के तपस्वी सन्यासी, अनेकों विद्यार्थियों को वैदिक विचारों का अमृतपान कराकर उनके जीवनोद्यान को सुरभित करनेवाले प्रसिद्ध समाजसेवी व्यक्तित्त्व तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के आधारस्तम्भ व संरक्षक

पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चन्द्र गुरुजी)

के १०० वे जन्मदिवस पर उनका आर्यजगत की ओर से **हार्दिक अभिनन्दन** एवं उनके शताधिक आयु व उत्तम स्वास्थ्य के लिए

शुभ कामनाएँ ×

आगामी जन्मशताब्दी वर्ष में बडे पैमाने पर निम्नलिखित कार्यक्रम होंगे -

१. सभा ने पहले ही अपने सभी कार्यक्रम पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी जन्मशताब्दी के लिए समर्पित किये है । आगे भी वर्षभर कार्यक्रम चलते रहेंगे।

२. गुरुजी के छात्रों की बैठक बुलाकर इसमें ÷**पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जन्मशताब्दी समारोह समिति'** की स्थापना होगी, जिसके द्वारा श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली–वै. में विशाल स्तर पर त्रिदिवसीय जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन होगा। इस समारोह में निम्नांकित कार्यक्रम होंगें –

*** चतुर्वेद पारायण यज्ञ**
*** पूज्य गुरुजी के शिष्यों का सम्मेलन**
*** पूज्य गुरुजी के माता-पिता व दादाजी का कृतज्ञता स्मृति गौरव समारोह**
*** अंतरजातीय विवाह परिवार सम्मेलन**
*** मानवता संस्कार एवं आर्यवीर दल शिविर**
*** आर्य कार्यकर्त्ता- संगठनात्मक चिन्तन शिविर**
*** स्वास्थ्य रक्षा व चिकित्सा शिविर**
*** वानप्रस्थी चिन्तन सम्मेलन व वानप्रस्थी दीक्षा समारोह**
*** महिला सम्मेलन**
*** महाराष्ट्र- गुरुकुल स्नातक सम्मेलन**
*** पुरोहित सम्मेलन**

इस समारोह में आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान, लेखक, गुरुकुलों के आचार्य तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जायेगा ।

अत: पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (गुरुजी) के शिष्यों, अनुयायियों तथा प्रान्तीय सभा के पदाधिकारियों व आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि, पूज्य गुरुजी के जन्मशताब्दी समारोह को सफल कराने हेतु तन–मन–धन से पूरा सहयोग देवें व अपना किमती समय भी प्रदान करें।

भवदीय– **डॉ.ब्रह्ममुनि(प्रधान), माधवराव देशपान्डे(मन्त्री) व अन्य पदाधिकारी**

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली-वै. जि.बीड

दक्षिण में आर्यों के बलिदान की परम्परा

(गताङ्क से आगे)

- प्रा.राजेंद्र ÷जिज्ञासु'

श्याम भाई के संगी साथी जेलों में यातनायें भोग रहे थे। दक्षिण का गेरीबाल्डी पं.नरेन्द्र मनानूर के कालेपानी के जंगलों में पिजरे में बन्द कर दिया गया। अन्यायी ने समझा कि वेदप्रकाश के बलिदान यज्ञ की ज्वाला ठण्डी पडी। पिंजरे में बन्द नरकेसरी नरेन्द्र की दहाड निजाम राज्य के ओर छोर युवकों के हृदयों को गर्मा रही थी।

निजाम ने अभी करवट भी नहीं बदली थी कि निजाम की जेलों में बन्द आर्यवीरों में आबाल वृद्ध में बलिदान यज्ञ की ज्वाला को अखण्ड प्रचण्ड रखने के लिए होड लग गई। फकीरचन्द, विष्णु भगवंत, शान्तिप्रकाश, कल्याणानन्द, सत्यानन्द- किस किस का नाम लें। शूरवीर धर्मप्रकाश कल्याणी तो श्याम भाई जी से भी पहले बलिवेदी पर जीवन अर्पित कर चुका था। देशभर के आर्यों में वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश, श्यामभाई के बलिदानों तथा नर नाहर नरेन्द्र की चिंघाड दहाड ने वीरों के सोये अरमान जगा दिये।

निजाम की सोच और प्रवृत्ति

इस बलिदान यज्ञ के इतिहास की अगली कडी पर कुछ लिखने से पहले हैदराबाद के तत्कालीन शासकी की सोच तथा प्रवृत्ति पर उसी के शब्दों में कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है। निजाम ने अपने प्रधान मन्त्री राजा किशनप्रसाद को उसके पद से हटाया तो एक कविता रची। जिसकी दो पंक्तियां निजाम की नीति रीति का परिचय देती है -

तू किशनपरसाद है, मैं खुदापरशाद हूँ।
दीन का उस्मान हूँ, कुफ्र का जल्लाद हूँ।।

ऐसा न समझा जाये कि निजाम ने किशनप्रसाद के समान स्वयं को ÷खुदापरशाद' लिखा है। ÷खुदा' ÷पर' ÷शाद' ये तीन अलग-अलग शब्द हैं। इनका अर्थ खुदा पर प्रसन्न हूँ। ऐसा जानिये। उस्मान हजरत मुहम्मद के तीसरे खलीफा का नाम था। निजाम का भी निज नाम यही था। अरबी भाषा में इसका अर्थ अजगर, साँप, साँप का बच्चा आदि हैं। निजाम दूसरी पंक्ति में बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा को सर्प, अजगर, जल्लाद हत्यारा बनकर अपने मनोभावों को प्रकट करता है। यही तो जिहादी सोच है। जल्लाद बनने का इसमें जोश है।

दक्षिण के एक मुस्लिम पत्र ÷रहबरे दकिन' के फरवरी १९३९ के अंक में निजाम की कविता में ये पंक्तियाँ छपी थी

बन्द नाकूस हुआ सुन के नदाय तकबीर
जलजला आ ही गया, सिलसिले जुन्नार पै भी

अर्थात अल्लाहु अकबर के नारों की आवाज सुनकर हिन्दुओं के हृदय धडकने लगे। एक ऐसा भूकम्प सा इस धडकन से आया कि उनके तन पर लिपटे यज्ञोपवीत काँपने लग गये। उस्मान की इस नीति रीति और सोच का उत्तर आर्य सत्याग्रह के बलिदानों से दिया गया। वेदप्रकाश से लेकर शिवचन्द जी तथा गुलबर्गा हत्याकाण्ड के वीरों की सतत साधना का यह फल था कि आर्य जाति का बच्चा -२ कह उठा-

तीन दागे थे फक्त सूत के कच्चे लेकिन
बाजी जुन्नार ने ली हैदरी तलवार पै भी

अर्थात हमारे जनेऊ के तीन धागे मात्र कच्चे सूत से बने हुए थे, परन्तु इन तीन तारों ने इस्लामी तलवार पर विजय प्राप्त करके दिखाई। शासकों ने हृदयहीनता में कोई कमी नहीं छोडी। आर्यों ने संघर्ष, संग्राम करने तथा बलिदान देने में कोई कमी या दुर्बलता नहीं दिखाई। कमलापुर जिला गुलबर्गा में आर्यों के तीन वर्ष के बच्चे ने बलिदान दिया। कमलापुर में हैदराबाद दिवस पर जयकारे लगानेवाले आर्यवीरों को बन्दी बनाकर गुलबर्गा ले जाया गया। कमलापुर से गुलबर्गा तक पुलिस उनको पीटती गई। एक भी आर्य ने डरकर क्षमा नहीं मांगी।

गुलबर्गा आर्यसमाज के अनाथालय में व्यंकटराव नाम का एक ग्यारह बारह वर्षीय बालक पल रहा था। उसमें धर्मभाव कूट-कूट कर भरा हुआ था। वह आर्यसमाज के उत्सव, कथा, प्रचार की गलियों में बाजार में मुनादी तक स्वेच्छा से कर आया करता था। सत्याग्रह के दिनों में पुलिस ने आर्य मन्दिर पर छापा (Raid)मारा। समाज मन्दिर में उस समय केवल व्यंकटराव ही था। पुलिस ने आर्यसमाज के पुस्तकालय की सब पुस्तकों को खोलकर उलट-पुलट कर देखा। आर्यसमाज की अल्मारियों में प्राप्त हुए सब पत्रों की जाँच की। इस छापामारी में पुलिस के हाथ एक उर्दू पुस्तक लग गई। यह पुस्तक निजाम राज्य में प्रतिबंधित थी। बस× अंधे को और क्या चाहिये? दो आँखे। निजाम राज्य में तो शिवाजी का पवाडा(लोकगीत), लोकमान्य तिलक की जीवनी दर्शन की एक पुस्तक ÷जवाहिरे जावेद' (जीव, प्रकृति के अनादित्व विषय पर) भी प्रतिबंधित थी। जो पुस्तक पुलिस के हाथ लगी उस पर किसी का देवनागरी में नाम लिख रखा था। मुसलमान पुलिस वाले हिन्दी नहीं पढ सकते थे। उस बालक व्यंकटराव से पूछा, ÷÷यह किसका नाम लिख रखा है,'' उसने दृढता से कहा, ÷÷यह मेरा नाम लिखा हुआ है। यह मेरी ही पुस्तक है।''

वास्तव में नाम श्री निवृत्तिराव जी का लिख रखा था। पुस्तक भी उन्हीं की थी। वह समाज के पुस्तकाध्यक्ष, मन्त्री आदि पदों पर रहे। पुलिस का काम कुछ

तो बना। उस १२ वर्षीय बालक को बन्दी बना लिया गया। सारे नगर में शोर मच गया। हिन्दू मात्र की अनाथ बच्चे के प्रति सहानुभूति थी। आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सज्जन तथा नगर के कई हिन्दू कोतवाली पहुँचे । बना तो कुछ नहीं। व्यंकट को जेल भेज दिया गया। जब उसने स्वयं ही न्यायाधीश के सामने कहा कि यह पुस्तक मेरी है, तो दण्डित होना ही था। अवयस्क था, सो केवल पन्द्रह दिन की जेल हुई। निवृत्तिराव जी ने उसे पूछा,÷÷जब पुस्तक पर नाम मेरा लिख रखा है, फिर तूने कैसे कह दिया कि यह पुस्तक मेरी है?''

वीर बालक ने कहा, ÷÷मेरे जेल जाने से तो समाज की कुछ भी हानि नहीं होगी। आपको सत्याग्रही वीरों की भरती, जत्थों का स्वागत, जत्थों को भेजना, धनसंग्रह और प्रचार सभाओं का आयोजन अनेक कार्य करने हैं। आपके जेल जाने से आन्दोलन की हानि है। इस कारण मैने यह कहा कि यह मेरा नाम लिख रखा है। यह पुस्तक मेरी ही है। इस वीर बालक की वीरता की यह घटना स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। कारागार से मुक्त होते ही वीर व्यंकट शोलापुर सत्याग्रह शिविर पहुँच गया। उसने अब सत्याग्रह करके जेल जाने का हठ किया। सत्याग्रह के संचालक सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का कडा अनुशासन था कि १८ वर्ष से छोटा कोई व्यक्ति सत्याग्रह नहीं कर सकता। व्यंकट हिचकियाँ सुबकियाँ लेले कर रोने लगा। कहा- ÷जब तक विजय प्राप्त नहीं होती, मैं तो जेल जाता रहूँगा।' तब भाई बंशीलालजीने महाराज से कहा, यह तो निडर बालक है। डरा नहीं, दबा नहीं । जेल हो आया है। परखा जा चुका है। इसे अनुमति दे दें। भाई जी के अनुमोदन से व्यंकट की इच्छा पूरी हो गई। वह बार-बार जेल गया। सत्याग्रह की विजय पर कुँवर चाँदकर जी शारदा ने उसकी वीरता पर रीझकर हैदराबाद सभा से अनाथ शूरवीर बालक व्यंकट को राजस्थान के लिए मांग लिया। गुरुकुल चित्तौड में उसकी शिक्षा की व्यवस्था की गई। महामारी फैलने से वह शीघ्र चल बसा। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रो.सुधाकर जी ने व्यंकट वीर को सम्पादकीय लिखकर श्रद्धान्जली दी। खेद है कि आज हमारे आर्यवीर दलवाले जुडो कराटे सिखाते और स्तूप तो बनाते बनवाते हैं,परन्तु व्यंकट वीर का नाम आर्य वीर दल में कोई नहीं जानता।कहिये भविष्य क्या बनेगा?

हैदराबाद में घुटन ही घुटन थी

हैदराबाद स्टेट की बहुसंख्यक प्रजा के लिए तब घुटन ही घुटन थी। निजाम राज्य एक विशाल कारागार का रूप था। राज्य की सामंतशाही तो समृद्ध थी, सम्पन्न थी परन्तु प्रजा दरिद्रता की चक्की में पिस रही थी। न तो शिक्षा की उत्तम व्यवस्था

थी और न ही बडे-बडे नगरों व कस्बों में स्कूल व कॉलेज थे। अपवाद रूप में गिने चुने शिक्षणालय थे। कहने को एक विश्वविद्यालय था। मूक प्रजा रो भी तो नहीं सकती थी। राज्य में स्वतन्त्र, निष्पक्ष और निर्भीक पत्र का प्रकाशन भी निषिद्ध था। आर्यसमाज ने २६.१२.१९३३ में साप्ताहिक ÷**वैदिक आदर्श**' उर्दू का प्रकाशन आरम्भ करके इतिहास को एक नई दिशा दी। वैदिक आदर्श राज्य की प्रजा की जनवाणी बन गया।

यह भ्रामक कथन है कि ÷**वैदिक आदर्श**' का जन्म ०७.१२.१९६४ को हुआ। स्वल्पकाल में सरकार ने इसके निर्भीक सम्पादक को मनानूर कालेपानी भेजने का निश्चय किया, तभी आर्य नेताओं के राज्य के भ्रमण पर आने से यह निर्णय कुछ काल के लिए टल गया, परन्तु ÷**वैदिक आदर्श**' का कुछ समय के पश्चात् गला ही घोंट दिया गया। जैसे लाला लाजपतराय जी व लोकमान्य तिलक को निर्भीक पत्रकारिता के लिए मण्डले निष्कासित किया गया, वैसे ही नरेन्द्र जी सम्पादक वैदिक आदर्श को मनानूर के कालेपानी में बन्द किया गया।

भारत के क्रान्तिकारियों के इतिहास में किसी क्रान्तिकारी पत्र ने अपने इतने स्वल्प जीवन में इतनी हलचल पैदा नहीं की जितनी कि वैदिक आदर्श ने । इस पत्र ने राज भवनों में हडकम्प मचा दिया। सन् १९३५ में तो पत्र का बलिदान हो गया।

राज्य में उर्दू की अनिवार्यता थी। तैलुगू भाषी, कन्नड भाषी, मराठी व हिन्दी भाषी - ये भाषायें पढ ही नहीं सकते थे। प्रजा को अपने पुरुषार्थ से उद्योग से स्कूल, पाठशालायें खोलने की भी अनुमति नहीं थी। धार्मिक स्वतन्त्रता तथा नागरिक अधिकारों का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। मन्दिर, यज्ञशाला-निर्माण, इनके जीर्णोद्धार का हिन्दुओं को अधिकार नहीं था। धर्म-प्रचार, उत्सवों के आयोजन की बात तो दूर... विवाह, शादी पर हर्षोल्लास से गाना बजाना भी अपराध था।

गुलबर्गा आर्य महसम्मेलन के पण्डाल में पुलिस के सिपाही को सिगरेट पीने से बलराम नाम के आर्यवीर ने रोका, तो बलराम ही क्या? आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता विनायक राव जी, नरेंद्र जी, पं.गणपत शास्त्री, सभा के क्लर्क हीरालाल की इतनी कुटाई पिटाई की गई कि जालियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड का इतिहास दोहरा दिया गया। पं.नरेद्र जी के पैर की हड्डी ही तोड दी गई। हीरालाल को अधमरा करके फेंक दिया गया। नरेद्र जी की स्थिति उससे भी कहीं अधिक चिन्ताजनक थी। जब राज्य के युवा हृदय सम्राट नरेन्द्र जी का ऑपरेशन करने लगे तो उन्होंने यह कहकर अपना इलाज करवाने से इन्कार कर दिया

कि पहले गृहस्थी हीरालाल का पता करो। उसकी चिकित्सा हो। मैं तो फकीर हूँ, मर गया तो क्या? उसका परिवार न उजड जाये। ऐसे महामानव के संघर्ष और बलिदान को हमारा शत् शत् वन्दन× अभिनन्दन×× अब अपनी भावनाओं मे न बहकर हम अपने विचार-प्रवाह को विराम देते हुए एक विरोधी का कथन देकर उन सब ज्ञात-अज्ञात आर्य स्त्री-पुरुषों को भी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं जिन्होंने इस बलिदान यज्ञ में अपना लहू दिया... यथा-पं.मंगलदेवजी, श्री पं.रुद्रदेवजी, पं.प्रेमचन्द्रजी, पं.नरदेव स्नेही, श्री पं.गोपालदेव कल्याणी, गुलबर्गा के बलिदानी वीर लालसिंह व उनके साथी, उदगीर के पं.कर्मवीर जी, ताऊ चन्दूलाल, श्री उमराव सिंह, क्रान्तिवीर नारायणराव पवार व उनके सहयोगी, श्री गणपतराव कथले,श्री दत्तात्रेय प्रसाद, पं.पूर्णचन्द्र(स्वामी पूर्णानन्द जी), पं.चन्द्रभानुजी, श्री पं.रामचन्दजी देहलवी, आर्य गौरव न्यायमूर्ति केशवराव इत्यादि। इनके तप त्याग का मधुर फल हम चख रहे हैं। राज्य के सबसे पहले हिन्दी पत्र **÷वैदिक सन्देश'** के सम्पादक पं.त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री सिर पर कफन बांधे भाई श्यामलाल की दूरदृष्टि से दक्षिण पहुंचे।

घोर विरोधी ने कभी कहा था

गांधीजी के मित्र मौलाना शौकत अली निजाम राज्य में आये तो उन्होंने मुसलमानों से कहा कि आर्य समाज से सावधान रहना× इसे राज्य में आने व पनपने न देना। प्लेग एक भयानक महामारी है, तुम यह जानते हो। प्लेग का जन्म चूहे से होता है। आर्यसमाज का जन्म भी चूहे से हुआ है। आर्य समाज राज्य की समाप्ति का कारण बनेगा। श्री पं.कर्मवीरजी (उदगीर) ने मौलाना का यह भाषण सुना था। हमने उनके मुख से यह प्रसंग सुना था। आर्यों ने राज्य में प्लेग आदि महामारी के रोगियों की सेवा करके शासकों से प्रशंसा प्राप्त की। जान जोखिम में डालकर आर्यों ने रोगियों की सेवा की । राय ललिताप्रसाद ने रोगियों की सेवा करते-करते प्राण त्याग दिये।

हमने किसी की जान नहीं ली। शोषण, उत्पीडन, क्रूरता हमारे स्वभाव में नहीं परन्तु मौलाना का यह कथन इतिहास का एक कठोर सत्य है कि हमारे बलिदानियों, क्रान्तिवीरों ने जीवन देकर राज्य में नवजीवन का संचार किया। क्रूर शासकों का तो अन्त होना ही था। हमारे प्राणवीरों ने अपना कर्तव्य निभाया। अन्यायी अपने दुष्कर्मों से अतीत की कहानी बन गया है ।

(समाप्त)

- ÷वेदसदन', नई सूरज नगरी,
अबोहर(पंजाब)

क्या राजाश्रय से धर्म बढता है ?

– डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

आजकल लोग सम्प्रदाय व मत-पन्थ को ही ÷धर्म' की संज्ञा दे रहे हैं। उन्हें यह पता नहीं है कि सही धर्म क्या है और वह इन सम्प्रदायों से कैसे अलग है ? अंग्रेजी में जो 'Religion' शब्द है, वह पन्थों व मजहबों के लिए प्रयुक्त हुआ है। अंग्रेजी भाषा में धर्म के लिए स्वतन्त्र कोई शब्द ही नहीं है । क्योंकि अंग्रेजी भाषा के सामनेतो ये मत व पन्थ ही विद्यमान थे।

इतिहास के पन्नों को पलटेंगें, तो पता चलता है कि महाभारत के पश्चात् बडी मात्रा में अज्ञान, अंध:विश्वास व पाखण्ड बढकर अलग-अलग मत-पन्थ बन गये, जो कि मनुष्यों के द्वारा ही निर्मित हुए थे। फिर इन मतों को अपने-अपने समूह (ग्रुप) बनाने की व उनकी संख्या बढाने की होड लगी। तदनन्तर इन कार्यों के लिए ईर्ष्या-द्वेष व छलकपट बढने लगा। इन लोगों ने अलग-अलग मार्ग चलाने शुरू किये। सामान्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना, उन्हें अपने ही अनुयायी बनाये रखना और इसके लिए लालच देना, डराना, धमकाना आदि कार्य भी शुरू हुए। स्वर्ग, नरक की कल्पना भी लायी गयी । गुरूडमवाद, गुरूमंत्र, उनके आशीर्वाद आदि बातें शुरु हुई। कुछ किये बिना ही कल्याण करने का बिडा गुरु लोग उठाने लगे।

इन सभी मतसमूहों ने अपने-अपने मतों की वृद्धि करने की दृष्टि से राज्य भी करना शुरु किया । अथवा राजाओं से अपने मत-पन्थों का आग्रह कर उनकी ओर से राज्यशासन द्वारा प्रचार-प्रसार करना आरम्भ हुआ। फिर यह प्रचार देश-विदेशों में भी होने लगा। सम्राट अशोक इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है । उन्होंने बौद्ध मत स्वीकार कर पृथ्वीपर अनेकों देशों में बौद्ध मत का बहुत प्रचार किया। बाद में मतों में लडाइयाँ भी होती रही। खून-खराबा हुआ। ब्रिटिश राजसत्ता के कारण सारी दुनिया में ईसाई मत का प्रचार हुआ। इस्लाम ने तो तलवार आदि शस्त्रों के बलपर बलात् इस्लाम मत को बढाने का प्रयास किया। अन्य पारसी, जैन, यहुदी आदियों ने भी अपना-अपना प्रचार किया, किन्तु उन्हें प्रबल राजा व राज्य न मिलने से उनका अधिक प्रसार नहीं हो पाया। फिर भी जैन मत आजकल ठीक ही चल रहा है। हिन्दू मत को चंद्रगुप्त मौर्य जैसा प्रबल राजा तथा आचार्य चाणक्य जैसा मंत्री मिला।

इसलिए उन्होंने हिन्दू मत का संरक्षण किया और उसको बढावा भी दिया।

आज दुनिया में हिन्दू, ख्रिश्चन, इस्लाम व बौद्ध इन चार प्रमुख मतों के साथ ही जो पाँचवा मत है, वह धर्म व ईश्वर को मानता हीं नहीं, वह है ÷कम्युनिज्म मत'। इनके अतिरिक्त पूंजीवादियों का भी मत है। अन्य भी समाजवादी जैसे विचार विद्यमान हैं। किन्तु ये धार्मिक नहीं हैं। इन मतों में एक तरह से स्पर्धा ही लगी हुई है। हर कोई मत दुनिया को यह बता रहा है कि ÷हमारा अपना ही मत श्रेष्ठ है।' इसके लिए वह राजाश्रय लेकर भी प्रयत्न कर रहा है। अपने-अपने पन्थों की संख्या बढाने के प्रयास इस तरह सभी की ओर से जारी हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के आधारपर सही धर्म क्या है ? यह बात दुनिया के सामने रखी। धर्म की आवश्यकता क्यों है ? इसका भी उन्होंने स्पष्टिकरण दिया। स्वामीजी ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना भी की । धर्म तो निसर्गत: एक ही है । वह शाश्वत व सबके कल्याण का है । धारण किया जानेवाला हर एक तत्त्व ÷धर्म' ही है । धारण स्वेच्छा से होता है। यह धर्म सत्य व शाश्वत नियमों पर आधारित होता है । निसर्ग की व्यवस्था व परमात्मा का न्याय उसी में होता है । आज विद्वान, वानप्रस्थी, सन्यासी आदि सभी सोंच रहे हैं कि राजाश्रय मिल गया, या हम ही राज्य करनेवाले बन गये, तो सारी दुनिया को एक कानून में ही **÷आर्य'** बना देंगें। तथा सारे विश्व को वैदिक धर्मी बना देंगें। इसके लिए ये सभी लोग ऋषि दयानन्द के लेखन का भी सन्दर्भ गलत लगायेंगें। अर्थ भी गलत ही बतायेंगें। ÷सत्यार्थ प्रकाश' का छठा समुल्लास राजधर्म विषय को लेकर है। इसमें राजा के धर्म व कर्तव्य बताये गये हैं। राजा को राज्य कैसे करना चाहिए ? इसका वर्णन इस समुल्लास में किया गया है। राजा, मंत्री, सभा के सभासद आदि सभी की योग्यता क्या होनी चाहिए ? यह भी स्वामीजीने बताया है। इसके अनुसार आजकल की राजनीति भी परिपूर्ण नहीं हो सकती। दूसरी बात यह है कि राजा और प्रजा मिलकर राजार्य सभा, धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा बनावें, ऐसा वेद का आदेश है। महर्षि मनु का भी उपदेश यही है। आर्य समाजियों को राजार्य सभा बनाने की बात स्वामीजी ने नहीं कही है ।

आर्य समाज के छठे नियम में भी ऋषि दयानन्द ने सोंच समझकर ही विधान किया है। इसमें ÷संसार का उपकार करना' यह मुख्य उद्देश्य तो बता दिया है, किन्तु उसकी शुरुआत मानव के शारीरिक और आत्मिक उन्नति से की है। व्यक्ति के

निर्माण से ही समाज का निर्माण होता है। सामाजिक उन्नति करके संसार का उपकार करना यह क्रम है। इन विचारों के कारण आर्य समाज में भी दो गुट बन गये हैं। एक ÷आर्य समाज ने राजनीति में प्रवेश करना', यह माननेवालों का और दूसरा ÷आर्य समाज ने राजनीति में भाग न लेना चाहिए', यह कहनवालों का हैं× अब इसके मूल में क्या है? यह देखना आवश्यक है।

राजाश्रय से केवल मत-पन्थ बढते हैं, किन्तु उससे संसार का उपकार नहीं होगा। राजाश्रय से धर्म बढता नहीं, इसके विपरीत धर्माश्रय से राज्य अच्छा चलता है व फूलता-फलता है तथा बढता भी है। इसलिए तो पहले आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था। राजा लोग वैदिक धर्म के सिद्धान्त व जिससे सबका हित व कल्याण हो, उसे स्वीकार कर राज्य चलाते थे। सृष्टि में परमात्मा एक महान सर्वश्रेष्ठ राजा है। वही सुयोग्य न्यायाधीश व श्रेष्ठ गुरु है। ईश्वर की जो भी व्यवस्था सारे विश्व में व निसर्ग में दीखती है तथा नियम दिखायी देते हैं, वे सभी शाश्वत व सत्य हैं। वे कभी भी बदलते नहीं हैं। सृष्टि निर्माण तथा नियम तैयार करने का उद्देश्य है - ÷आत्मा का कल्याण करना।' आत्मा के कल्याण के लिए ही सृष्टि के सारे नियम हैं। उन नियमों को प्रामाणिकता से मानने व आचरण में लाने से ही आत्मकल्याण होगा, अन्यथा कदापि नहीं। इन शाश्वत नियमों का पालन करना ही तो धर्म है। धर्म से आत्मकल्याण होता है। आत्मकल्याण में ही सारी दुनिया का कल्याण निहित है। यह ÷सत्यधर्म' शाश्वत सत्य पर आधारित है, सार्वभौम व सार्वकालिक है तथा सबके कल्याण के लिए उपयुक्त है। इसका कोई संस्थापक नहीं है।परमात्मा स्वयं इसकी व्यवस्था करता है। ऐसे सत्य शाश्वत धर्म को स्वीकार कर जो राजा अपना राज्य (इस धर्म के अनुसार) चलायेगा, वही सबका कल्याण व आत्मकल्याण कर सकता है। वही पक्षपातरहित न्याय दे सकता है। तथा यश व कीर्ति बढा सकता है। राज्य का मूल उद्देश्य ही सब के आत्मकल्याण की व्यवस्था करना है। व्यवस्था को नियमों व सत्य ज्ञान की आवश्यकता होती है। अत: धर्म की आवश्यकता राज्य व्यवस्था को है। तो राजा को धर्माश्रय लेकर ही राज्य करना पडता है। राजा को पक्षपातरहित होना चाहिए, तभी वह निष्पक्ष न्याय दे सकेगा।

राज्यव्यवस्था में जितने भी कानून बनते हैं, उनका आधार शाश्वत धर्म, नीति व न्याय ही होता है। यदि ऐसा न हो तो व्यवस्था फिसल जाती है। इससे सबका हित व कल्याण नहीं होता। आज जितने

भी कानून व नियम हैं, उनका लोग पालन नहीं करेंगें, तो कल्याण कैसे होगा ? इसीलिए उनका पालन करना यह व्यक्ति से संबंधित है। सत्य को स्वीकारना, उसके अनुसार चलना यह व्यक्ति का काम है। यह सिखाने का काम राजा का नहीं, बल्कि आचार्य, गुरु, माता-पिता व विद्वानों का है। हाँ, राजा सिखाने की व्यवस्था कर सकता है, किन्तु सत्य व शाश्वत सत्य धर्म यह तो तत्त्वों को जाननेवाले, आचरण में लानेवाले, सिखानेवाले स्वतंत्र और अलग ही है। ऋषियों ने शाश्वत सत्य धर्म को जाना व आचरण में लाया और उसका लोंगों में प्रचार किया। आज ऐसे कितने राजा हो गये ? पता नहीं × किन्तु वे विचार, सिद्धान्त तथा वैदिक तत्त्वज्ञान आज भी सबके लिए खुले हैं। आज भी वे सबका हित कर सकते हैं। सृष्टि में सत्य धर्म व्यापक रूप से विद्यमान है। वह सार्वभौम भी है। राजा व राज्य ये सीमित हैं। अत: धर्म राजाश्रय को नहीं जायेगा। इसके विपरीत जो कोई राजा हो, उसे धर्म का आश्रय लेना होगा। जिन्हें सत्यधर्म का पता चला और जो उसके अनुसार अपना राज्य चलायेगा, वह सबका हित करेगा । जो राजा सत्य धर्म को छोडकर अज्ञान, अंधविश्वास को ही धर्म बतायेगा, पंथ को धर्म समझेगा और उसीके अनुसारही राज्य चलायेगा, तो स्वयं भी गोता खायेगा और प्रजा को भी धोखा देगा तथा पाप के भागी बनेगा। मत-पन्थों से सबका कल्याण कदापि नहीं हो सकता। इनसे आत्मकल्याण की तो दूर की बात रही। आजकल की राजनीति ने मत-पन्थों का आधार लिया है। इसीलिए सारी दुनिया में बिगाड आ चुका है।

अत: इसे ठीक तरह से समझने की आवश्यकता है। सत्य व शाश्वत सत्य नियम हमेशा के लिए होते हैं। सत्य धर्म यह शाश्वत, सार्वभौम, सर्वकाल तथा सब के कल्याण के लिए होता है तथा उसमें आत्मकल्याण भी निहित होता है। सुख-शान्ति व आनन्द के लिए धर्म होता है। आत्मा की स्वाभाविक इच्छा सुख-शान्ति व आनन्द के प्राप्ति की है। तो इसे पूर्णरूप से प्राप्त करने की जिम्मेदारी भी आत्मा की ही है। इसलिए सत्य स्वीकारना ही पडेगा, अच्छी बातों को धारण करना ही होगा तथा सत्य तत्त्वों को आचरण में लाना ही पडेगा। यदि हम सत्य ज्ञान की जगह दुनिया को अज्ञान बटोरते रहेंगें और उसी पर चलोंयेंगें व राज्य करेंगें, तो परिणाम भी भयंकर ही आयेंगें। इसलिए परमात्मा की व्यवस्था में शाश्वत ज्ञान, सत्यज्ञान, सत्यधर्म आदि के नियम सदा-सर्वदा के लिए बनें रहेंगें। इन्हें जो धारण करेगा, उसका कल्याण

निश्चित है। महर्षि कणाद ने राजा की भी सहाय्यता ठुकरायी थी और कहा था, ÷आपका अन्न खाने से मेरी बुद्धि बिगड जायेगी।' शाश्वत सत्यज्ञान सृष्टि के आरम्भ से है, आज भी विद्यमान है और आगे भी सृष्टि के अन्त तक मौजूद रहेगा। वह कभी नष्ट नहीं होगा। आत्मकल्याण के लिए सभी को उसकी आवश्यकता होती है। यह आत्मकल्याण हर एक को स्वयं ही कर लेना पडता है । जादुई छडी से कोई भी राजा सभी का कल्याण कर नहीं सकता।

राज्य की व्यवस्था चलाना यह एक अलग बात है और लोगों को धार्मिक, संस्कारशील बनाना तथा सुसंस्कृत, ज्ञानी, विवेकशील तथा कार्यक्षम बनाना यह अलग बात है । पहले लोगों को सही अर्थों में मानव तथा धार्मिक बनाने की जरूरत है । धर्मतत्त्वों की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक होता है । और यह काम ऋषि-मुनियों, ब्राह्मणों व विद्वानों का है। क्षत्रियों का काम राज्य की रक्षा करना है। इस तरह राज्य में चारों वर्ण अपने-अपने कर्तव्य धर्म व नियमों का पालन करने लगेंगें और राज्यव्यवस्था भी इसके लिए प्रेरणा देती रहेगी, तो निश्चय ही सुराज्य स्थापित होने में विलम्ब नही लगेगा।

आज लोगों को लगता है कि राज्य करने या नियम बनाने से सबकुछ बनेगा, तो यह दिवास्वप्न जैसा होगा। आजकल के मत-पंथवादी(धार्मिक कहलानेवाले) अपने-अपने पन्थ के आधारपर राज्य करना चाहते हैं और पन्थ को राजाश्रय देकर उसका प्रचार व प्रसार करना चाहते हैं। यह प्रयोग पहले भी हुआ है। इसी के कारण ही धरती पर रक्तपात हुआ। यह सबके कल्याण की बात नहीं है। आत्मकल्याण की तो कदापि नहीं। इससे धर्म की रक्षा न होगी। सच्चा धर्म, सत्यज्ञान, संस्कृति, मानवनिर्माण आदि सभी कार्य स्वतन्त्र रूप से त्यागी, तपस्वी, योगी, आप्तविद्वानों द्वारा निरन्तर चालू रहने चाहिए। धर्म आत्मा से सम्बन्ध रखता है, मनुष्यकृत मत-पन्थ व जाति से आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है। सामाजिक व राष्ट्रीय सुव्यवस्था के लिए तथा सम्पूर्ण सुरक्षा के लिए राज्य होता है, जिसका आधार सत्यधर्म माना जाता है। इसलिए आचार्य, माता-पिता, गुरुकुल, आश्रम, साधना केन्द्र आदि ही धर्म की रक्षा कर सकते हैं। इन्हें राजाश्रय मिला, तो ठीक और न मिला तो भी ठीक ही× लेकिन राजाश्रय पाने के लिए हम भी राज्य करेंगें, यह धारणा गलत है । ऋषि-मुनि लोग जब राजा का चयन करते थे, तब कौन

प्रबल था? किसका किसको आश्रय था ? इस पर अवश्य सोंचें× यदि राजा गलत काम करता, तो उसे निष्कासित करने का काम भी ऋषि-मुनि लोग ही किया करते थे। धर्म के आश्रय से ही अच्छे राज्य चलते है× इसलिए संयमी, निर्व्यसनी, योगी, शूरवीर, चरित्रवान व्यक्ति को ही राजा बनाया जाता था। तो यहाँ पर भी पहले धर्म ही है, बाद में वह राजा× यदि वह धार्मिकता से राज्य करता हो, तो समुचित× अन्यथा वह अधार्मिकता से करता हो, तो उसे हटाया जाता था। तत्कालिन धार्मिक क्षेत्र आजकल बहुत ही दूषित हो चुका है। इसे शुद्ध व पवित्र बनाने की आवश्यकता है और यह काम कठोर तपश्चर्या, त्याग व समर्पण से ही हो सकता है। मनुष्य के बिगडने मात्र से ही आज सारी दुनिया में अनेकों समस्याएँ उत्पन्न हुई है। क्योंकि धार्मिक दृष्टि से आज मानव बडे पैमाने पर अज्ञानी बन गया है। इसलिए मानवमात्र के निर्माण का कार्य वैदिक ज्ञान व धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझकर ही पूर्ण हो सकता है। अन्य किसी मार्ग से कदापि नहीं×

(लेखक महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं)

- आर्य समाज परली-वै.
मो.९४२११९५१९०४

आरोह तमसो ज्योतिः।

अन्धःकार से प्रकाश की चलने की प्रेरणा देनेवाले ÷ज्योतिउत्सव'

दीपावली-पर्व

के उपलक्ष्य में सभी आर्यजनों व देशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं...×

अज्ञान, अविद्या व नानाविध विकारों के घोर तिमिर को हटाकर वेदज्ञान के सूर्यालोक में प्रविष्ट होने का, आओ × शुभसंकल्प करें×

✻ शुभेच्छुक ✻

डॉ.ब्रह्ममुनि(प्रधान), माधव देशपाण्डे(मन्त्री), उग्रसेन राठौर(कोषाध्यक्ष)

तथा समस्त पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य गण,

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली-वैजनाथ

गुरुकुल आमसेना का स्वर्ण जयंती समारोह

आर्य विद्या के प्रचार व प्रसार में संलग्न आर्य जगत् का प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान ÷आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना(उडीसा)' इस वर्ष अपनी स्थापना के ५० वर्ष पूर्ण कर रहा है । यह स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दि.२३, २४ व २५ दिसम्बर २०१७ को आमसेना गुरुकुल आश्रम में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है, जिसमें चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ(दि.१ से २५ दिसम्बर), ५१ कुण्डीय राष्ट्र रक्ष महायज्ञ (२३ से २५ दिसम्बर), भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन, आर्यसम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, १५ त्यागी-तपस्वी-कर्मठ-विद्वानों व संन्यासियों का सम्मान समारोह आदि कार्यक्रमों का समावेश है । इस स्वर्णजयंती समारोह में पू.स्वामी रामदेवजी, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, ओडिसा व झारखण्ड के राज्यपाल तथा छत्तीसगढ के मुख्यमंत्री व कई केन्द्रीय व ओडिसा सरकार के मंत्रियों को आमन्त्रित किया गया है। साथ ही आर्य जगत् के सन्यासी सर्वश्री पू.स्वामी चित्तेश्वरानंदजी, विवेकानंदजी, प्रणवानन्दजी, अमृतानन्दजी, ब्रह्मानन्दजी, आर्यवेशजी, ऋतस्पतिजी, धर्मेश्वरानन्दजी, सुमेधानन्दजी (सांसद), डॉ.आनंद स्वामीजी आदियों के साथ ही डॉ.ब्रह्ममुनिजी, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, डॉ.महावीरजी आदि विद्वान, मनीषी व चिन्तक सम्मिलित हो रहे हैं। अत: इस गुरुकुल आमसेना के स्वर्णजयंती महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में आर्यजनों का पधारने का आवाहन पू.स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी आदियों ने किया है।

होशंगाबाद में उपदेशक महाविद्यालय शुरु

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम, होशंगाबाद(म.प्र.) में गत जून माह से आर्य उपदेशक महाविद्यालय का शुभारम्भ हो चुका है । आर्य जगत् के लिए सुयोग्य उपदेशक व प्रचारक तैयार करना, यह इस महाविद्यालय का उद्घाटन हुआ। आर्य जगत् के लिए सुयोग्य उपदेशक व प्रचारक तैयार करना, यह इस महाविद्यालय का उद्देश्य है।

इस महाविद्यालय में न्यूनतम दसवी कक्षा उत्तीर्ण किये हुए १८ वर्षीय स्वस्थ, लगनशील व चरित्रवान् युवा छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता हैं। त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में ६-६ माह के भीतर छ: परीक्षा लेकर उपाधियां दी जायेगी।

***

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश ब्रह्म (ईश्वर) हाच सर्वांचा आधार×

उर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थ: सनातन:।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते।
तस्मिंल्लोका: श्रिता: सर्वे तदु नान्येति कश्चन । एतद्वै तत्।।

(कठोपनिषद्-६/१)

ज्याचे मूळ (जड) वरच्या दिशेने आणि फांद्या खालच्या दिशेने झेपावल्या आहेत असे हे प्रत्यक्ष मानवी शरीर आणि हे सारे जग× या दोन्हींचा प्रवाह अनादी आहे. हा जीवनप्रवाह पिंपळवृक्षाच्या पानाप्रमाणे अस्थिर आहे, जो की उद्यापर्यंत राहील की नाही ? हे सांगता येत नाही. हे मानव शरीर किंवा जगरुपी वृक्ष ज्यावर आश्रित आहे, तो सृष्टीचा निर्माता ईश्वर पवित्र आहे. तो खरोखरच सर्वांपेक्षा महान(ब्रह्म) आहे. ÷तोच अविनाशी आहे', असे त्या ब्रह्म्याविषयी विद्वान लोक कथन करतात. त्याच ब्रह्म्यामध्ये सर्व पृथ्वी आदी लोक आश्रित आहे. (खरोखरच) त्या ईश्वरीय शक्तीचे उल्लंघन कोणतेही जग किंवा पुरुष करू शकत नाही. म्हणजेच त्या अटळ व्यवस्थेचे पालन सर्वजण करीत आहेत, असा तो निश्चित ब्रह्म(ईश्वर) आहे.

दयानंद वाणी ÷....... त्याचे माणूस हे नाव ×'

जो मननशील असेल आणि इतरांची सुख-दु:खे व लाभहानी ही आपलीच आहेत, असे समजेल. त्यालाच मनुष्य म्हणावे. माणसाने अन्याय करणाऱ्या बलवानालाही भिता कामा नये व धर्मपरायण दुबळ्यालाही भ्यावे. इतकेच नव्हे तर आपल्या सर्व सामार्थ्यांनिशी धर्मात्म्याचे रक्षण, उन्नती व प्रियाचरण करावे. मग ते धर्मात्मे अत्यंत अनाथ, दुर्बळ व गुणरहित असले, तरी हरकत नाही. तसेच जर एखादा अधर्मी चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान आणि गुणवान असला तरीही त्याचा नाश, अवनती व अप्रियाचरण माणसाने सदैव करावे... अर्थात शक्य असेल तोपर्यंत अन्याय करणाऱ्यांच्या सामर्थ्यांची हानी व न्यायी लोकांच्या सामर्थ्याची उन्नती त्याने नेहमी करावी. हे करीत असतांना त्याला कितीही दारूण दु:ख भोगावे लागेल, किंबहुना प्राणही द्यावा लागला तरी त्याने या माणुसकीरूपी धर्माचा त्याग कधीही करू नये.

(म.दयानंद कृत÷स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश')

दीपावली आणि देव दयानंद

– पं.राजवीर शास्त्री

सन १८८३ च्या दीपावली दिवशी सायंकाळी महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांची प्राणज्योत मालवली. त्यामुळे आर्य जगतात दीपावली सणासोबतच ÷स्वामी दयानंदांचा निर्वाण दिवस' ही साजरा केला जातो. वर-वर पाहता एवढाच काय तो दीपावलीशी देव दयानंदांचा संबंध × महर्षींची थोरवी गातांना इतिहासकेसरी श्री पं.निरंजनदेवजी लिहितात- ÷÷जगभरातल्या महापुरुषांमध्ये महर्षी दयानंदांची शानच निराळी× अन्य महापुरुषांमध्ये एकात एक गुण आढळतो व दुसऱ्यात दुसराच× कुणी विद्वान आहे, पण योगी नाही. कुणी योगी असला, तर तो सुधारक नाही. कोणी सुधारक असला, तर निर्भीड नाही. कोणी निर्भीड असेल, तर ब्रह्मचारी नाही. एखादा ब्रह्मचारी आहे, पण संन्यासी नाही. तर एखादा संन्यासी आहे, पण सत्य व स्पष्ट वक्ता नाही× कोणी वक्ता असेल, तर लेखक नाही. कुणी लेखक असेल, तर तो सदाचारी नाही. कुणी सदाचारी आहे, पण परोपकारी नाही. कुणी परोपकारी असेल, तर कर्मठ नाही. कुणी कर्मठ असेल, तर त्यागी नाही. एखादा त्यागी आहे, पण देशभक्त नाही. एखादा देशभक्त आहे, पण वेदभक्त नाही. कुणी वेदभक्त असेल, तर उदार नाही. कुणी उदार असेल, तर शुद्धाहारी नाही. कोणी शुद्धाहारी असेल, तर योद्धा नाही. कोणी योद्धा असेल, तर तो सरळ व दयाळू नाही.एखादा सरळ व दयाळू आहे, पण संयमी नाही. **परंतू हे सर्व गुण एकत्रित पाहावयाचे झाल्यास ते दयानंदांच्या ठायी दिसतील×**''

कोहिनूर हिरा अन्य हिऱ्यांच्या तुलनेत सर्वाधिक मौल्यवान मानला जातो. कारण तो निष्कलंक असून अनेक पैलूंनी युक्त असतो. त्यामुळे तो चमकदार ही आहे. हिऱ्याला जेवढे अधिक पैलू, तेवढे त्यांचे मूल्य अधिक असते. महर्षी दयानंदांचे व्यक्तिमत्त्व व कर्तृत्व असेच कोहिनूर हिऱ्याप्रमाणे निष्कलंक, चमकदार व अनेक पैलुंनी युक्त होते. जनमानसांत अशी एक धारणा आहे की, हिरा बसवलेली अंगठी बोटात धारण केली असता, त्या व्यक्तीचे भाग्य उजळते. पण हे किती खरे आणि किती खोटे? या विषयी न बोललेच बरे× पण ज्यांनी-ज्यांनी दयानंदरूपी हिरा धारण केला, त्याचे जीवन निश्चितच सत्यप्रकाशांनी उजळून निघालेच म्हणून समजा× म.दयानंदांमुळे अनेकांचे जीवन सध्या उज्वल बनले व भविष्यातही होणार× केवळ माणसांचेच भाग्य उजळले असे नाही,

तर महर्षी दयानंदांमुळे भारत देशाचेच काय, साऱ्या जगाचेच भाग्य उजळले.

दयानंदांच्या प्रत्येक पैलूंची चर्चा करणे शक्य नाही. दीपावलीच्या निमित्ताने थोडीशी चर्चा करु या त्यांच्या जीवन वैशिष्ट्यांची× महर्षी दयानंद हे वैदिक धर्म, संस्कृती व राष्ट्राचे सत्य अर्थ प्रकाशक होते. ते एक सजग प्रहरी होते. प्रखर प्रचारक होते व खंदे रक्षकही होते. त्यांच्या जगण्याचा व त्यांनी केलेल्या कार्यामागचा एकच उद्देश्य होता, तो म्हणजे जगाचे कल्याण× त्यांनी आर्य समाजाची स्थापना सुद्धा जगावर उपकार करण्याच्या सद्हेतूनेच केली होती. जगाचे कल्याण करायचे म्हंटले की, वैदिक संस्कृतीला जीवंत ठेवणे व तिला सशक्त बनविणे गरजेचे ठरते. संस्कृती हा राष्ट्राचा आत्मा आहे. राष्ट्राच्या उन्नतीचे व अवनतीचे मोजमाप करण्याचा मापदंड आहे संस्कृती× वैदिक संस्कृतीमध्ये विश्वाला स्वर्गधाम बनविण्याचे सामर्थ्य आहे. संस्कृती म्हणजे सम्यक कृती× यथोचित कृती× समुचित कर्म× धर्मसम्मत आचरण× ज्या विचार व व्यवहाराने आपले जीवन उंचावते, त्या विचार व व्यवहाराचे नाव संस्कृती आहे. ज्याने फक्त आपलाच व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्ध होत नाही, तर सर्व मानवमात्राचे व प्राणिमात्राचे कल्याण होते, त्या जीवन पद्धतीचे, त्या परंपरेचे नाव आहे ÷संस्कृती×' पंचमहायज्ञ, योग, सण, उत्सव, पर्व, इष्टी, संस्कार, प्रथा व परंपरा हे संस्कृतीचे आधार आहेत. आणि या आधारांना सुधारण्याचे महत्वाचे काम स्वामी दयानंदांनी केले. पण जे दयानंदांकडे दुर्लक्ष्य करतात, ते लोक दुर्दैवी आहेत, असे खेदाने म्हणावे वाटते. आजही बहुजनांना धर्म व अधर्म यामधील व संस्कृती व विकृती या मधील फरक कळत नाही. भारतात वर्षभरात जे सण-उत्सव साजरे करतात. त्यात धर्म, संस्कृती व देश हिताचा कांहीच भाग नाही. प्रत्येक सणाच्या स्वरुपात विकृती आली आहे. ज्याला जे वाटेल, ते तो देवा-धर्माच्या नावावर करतो आहे. आज सण-उत्सव साजरे केल्याने कांही जनांना रोजगार मिळतो. पुजारी हे व्यापारी लोकांचे खिसे भरतात. एवढाच काय तो फायदा× सामान्य श्रद्धाळू लोकांच्या श्रद्धेचा, वेळेचा व धनाचा अपव्यय होतो. त्यांच्या काहीच पदरी पडत नाही. सणांचे खरे स्वरुप काय आहे ? त्यांचा उद्देश्य काय आहे ? आणि त्या उद्देश्याला सिद्ध करण्यासाठी ते कसे साजरे केले जावेत ? याची माहिती देणारे पुस्तक महर्षी दयानंदांच्या विद्वान शिष्यांनी **÷आर्यपर्वपद्धती**' या नावाने प्रकशित केले आहे. त्या पर्व पद्धतीचा अंगिकार केला गेला, तर अज्ञान, अन्याय, अभाव, भेदभाव, असंघटन भाव, रोगराई, दुर्व्यसन, भ्रष्ट आहार, भ्रष्टाचार, पशुहत्या,

व्यभिचार, अत्याचार, फसवेगिरी, शोषणवृत्ती आदी अनेक नरकासुरांचा नाश होईल आणि समाजात चांगुलपणाची वृद्धी होईल, यात शंका नाही.

दीपावली सणापुरतेच बोलायचे तर दीपावली सणात फोडले जाणारे फटाके ही विकृती आहे. फटाक्यांचा दुर्गंध, त्याचा कचरा, त्याचा आवाज, त्याचा आरोग्यावर होणारा परिणाम हा प्रत्यक्ष दिसतो. तरीही लोकांना हे सर्व कांही आपल्या संस्कृतीचेच मूल्य भासतात. जेंव्हा की सर्व सणांचा मुख्य उद्देश्य आहे – ÷सुख, समृद्धी, शांतता व कल्याण आणि समाजात सख्य व ऐक्य×' फटाक्यांमुळे यातले काय साध्य होते? तेंव्हा दीपावली असो की आणखी कुठला उत्सव असो × फटाक्यांना कायमचा फाटा देणे पर्यावरणाच्या दृष्टीने योग्य आहे. त्याऐवजी प्रत्येक सण व उत्सव प्रसंगी **÷यज्ञ'** करण्याचे विधान शास्त्रकारांनी केले आहे. त्याचा स्वीकार व अंगीकार करायला हरकत नाही. कारण ÷यज्ञ' ही संस्कृती आहे. प्राणिमात्रांचे कल्याण हा जसा सणांचा उद्देश्य आहे, तसा यज्ञाचाही उद्देश्य आहे– प्राणिमात्राचे कल्याण× यज्ञ–हवन करण्याने पर्यावरणातील प्रदूषित घटकांचा नाश होतो. वातावरण सुगंधयुक्त व औषधीयुक्त बनते. रोगजंतूंचा नाश होतो. मनुष्य, पशु–पक्षी व औषधी वनस्पती हे सगळेच रोगरहित होतात. शिवाय आदर, प्रेम, सेवा, सहकार्य, समर्पण, दान,दया व आपुलकीची भावना वाढीस लागते. समाज भयरहित बनतो. अन्न–पाण्याचा सदैव सुकाळ असतो. त्यामुळे यज्ञाला संस्कृती म्हटले जाते. मध्यंतरीच्या काळात हा ÷यज्ञ' ही संकल्पना मूर्ख व पाखंडी लोकांच्या हाती आली. त्यांनी या पवित्र यज्ञाचा दुरुपयोग केला. त्यामुळे कांही विचारवंतांच्या नजरेतून ÷यज्ञ' तिरस्कृत झाला. पण वेदांनी ज्या यज्ञाचे (अग्निहोत्राचे) लाभच लाभ वर्णिले, तो यज्ञ (अग्निहोत्र) थोतांड असू शकत नाही, हे महर्षी दयानंदांनी ओळखले आणि त्या यज्ञीय संस्कृतीला शास्त्र व विज्ञानाची जोड देऊन सन्मानित केले. जगाला यज्ञाची उत्तम विधी, उत्तम लाभ व त्याची उपयुक्तता समजावून सांगितली. त्यासाठी त्यांनी **÷पंचमहायज्ञ विधी'** हे छोटेखानी पुस्तकही रचले. तसेच त्यांनी **÷संस्कार विधि'** हा ग्रंथही प्रकाशित केला. त्यातही त्यांनी यज्ञाला प्रतिष्ठा मिळवून दिली. कोणताही संस्कार यज्ञाविना संपन्न होऊ शकणार नाही. तसेच कोणताही सण व उत्सव यज्ञाविना साजरा केला जाणार नाही, याची दक्षता घेतली. असे असतांना आपण दररोज सकाळी–संध्याकाळी घरी अग्निहोत्र करीत नसू× नामकरण–विवाहादी प्रसंगी किंवा सण–उत्सव प्रसंगीही यज्ञ करीत नसू, तर निश्चितच आपण अपराधी ठरतो. महर्षी

दयानंदांना एकाने प्रश्न विचारला की, ÷यज्ञ न केल्यास पाप लागते काय?' त्यावर स्वामीजींनी उत्तर दिले ÷होय.' आणि ते पुढे ते लिहितात- ÷कारण ज्या माणसाच्या शरीरापासून जेवढा दुर्गंध उत्पन्न होतो, तो हवा व पाणी यांना दूषित करून रोगांच्या उत्पत्तीला कारणीभूत ठरतो. त्यामुळे प्राण्यांना दु:ख मिळते. तेवढ्या प्रमाणात त्या माणसाला पाप लागते. म्हणून त्या पापाच्या निवारणार्थ तितकाच किंवा त्याहून अधिक सुगंध हवेत व पाण्यात पसरविला पाहिजे. शिवाय एखाद्या व्यक्तीला खाऊ-पिऊ घातल्याने फक्त त्यालाच विशेष सुख मिळते. एक मनुष्य जेवढे तूप व सुगंधी पदार्थ याचे सेवन करतो. तेवढ्या द्रव्याच्या होमाने लाखो मनुष्यांना लाभ होतो... म्हणूनच आर्यवर शिरोमणी, महाशय, ऋषी-महर्षी, राजे-महाराजे हे पुष्कळ होम करीत व करवीत असत. जोपर्यंत होमाचा प्रचार चालू होता, तोपर्यंत आर्यावर्त देशात रोगाचे नाव नव्हते आणि तो सर्व सुखांनी परिपूर्ण होता. अजूनही होम प्रचारित झाला, तर तशी सुस्थिती येऊ शकेल.' आणखी एके ठिकाणी ते म्हणतात. ÷÷मनुष्यांनी अशा प्रकारे यज्ञ केला पाहिजे की ज्यामुळे पूर्ण लक्ष्मी, यशयुक्त आयुष्य, अन्नादी पदार्थांची प्राप्ती होऊन रोगांचा नाश आणि सर्व सुखांचा विस्तार होईल. अशा यज्ञाला कधीच सोडून देता कामा नये. कारण की त्याशिवाय हवा, पाणी, जल आणि औषधींची शुद्धी होऊ शकत नाही. आणि शुद्धी शिवाय प्राणी चांगल्या प्रकारे सुखी राहू शकत नाही. म्हणून ईश्वराने यज्ञ करण्याची आज्ञा सर्व मनुष्यांना दिली आहे.'' ईश्वराची आज्ञा शिरोधार्थ मानून आपणही यज्ञमय होऊ या× व यावर्षीची दिवाळी फटाकेमुक्त साजरी करू या×

दीपावली दिवशी शारदीय नवसस्येष्टी यज्ञाचे आयोजन करणे इष्ट आहे. आम्ही म.दयानंदांना मानतो, पण दयानंदांचे काही एक ऐकत नाहीत. आर्य समाजाच्या तत्त्व-सिद्धांतांना मानतो, पण त्यांचे पालन करीत नाहीत. आपल्या अशा वागण्याने एक प्रकारे स्वामीजींचा अनादरच होईल. मग त्यांचा असा निर्वाण दिवस साजरा करण्यात तरी काय अर्थ आहे ? तेंव्हा - पं.चमुपती म्हणतात-

हमारा विचार ऋषि का विचार हो,
हमारा आचार ऋषि का आचार हो,
हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो।

महर्षी दयानंदांना अभिप्रेत अशा विचार व कार्याप्रमाणे मनसा-वाचा-कर्मणा वेदानुकूल कर्म करीत राहणे, हीच खरी त्यांना आदरांजली ठरेल. आणि आम्हां आर्य समाजी निष्ठावंतांची पण हीच खरी ओळख ठरेल. याकरिता जागे व्हा आणि वैदिक धर्म, संस्कृती व राष्ट्राच्या

रक्षणासाठी तत्पर राहा. शेवटी प्रख्यात वैदिक विद्वान स्व.पं.श्री गंगाप्रसादजी उपाध्याय यांच्या स्वरांमध्ये स्वर मिसळून गाऊया आणि दयानंदाप्रमाणे जगण्याचा संदेश हृदयी बाळगू या –

दयानन्द की पैरवी करनेवालो।
दयानन्द के नाम पर मरनेवालो ।
दयानन्द के कर्ज को भरनेवालो ।
दयानन्द के काम करनेवालो ।
खबरदार पैरों का डिगने न देना ।
खबरदार दिल को धडकने न देना ।
दयानन्द हिम्मत दिलाते रहेंगें ।
दयानन्द आगे बुलाते रहेंगें ।
दयानन्द मुश्किले मिटाते रहेंगें ।
दयानन्द डर से बचाते रहेंगें ।
किसी दिन यह होगा जहां की जुबां पर,
÷दयानन्द की जय, दयानंद की जय'।।

– आर्य समाज, कस्तुरबा मार्केट,
सेठ बलदवा मार्ग, सोलापुर
मो.९८२२९९००११

काव्यसुधा

प्रभु वंदना

- सौ.सुलोचना बापुराव शिंदे

ओ३म् प्रभु तुला वंदीन वारंवार
भक्तिभावे हवनाचा करीन जय जयकार ।।धृ।।
नित्य नेमे मज सत्याची हाव ।
शुद्ध आचरणी मी धरीयेला भाव ।
वैदिक धर्माचा मी करीन प्रचार ।।१।।
हवन रुपाने मने उजळती सारी ।
अनंत लाभ मिळती या संसारी ।
सदा तुझ्याकडे मागते मी वर ।।२।।
हवन केल्याने शुद्ध होई हवा।
प्राणिमात्रांना लाभे आरोग्याचा ठेवा।
शांती मिळे मना सुख निरंतर ।।३।।
भक्त सुलोचना तुम्हां जोडीयते हात ।
सत्कार्य करण्यासी लागू द्या हो चित्त ।
मानव जन्म आहे क्षणभंगुर ।।४।।

– मु.पो.निवघा ता.हदगांव जि.नांदेड
मो.८३०८५४१४४३

(मागील अंकावरून)

÷गूँज उठी’ गुंजोटी ×

– पं.रमेश तुळशीराम ठाकूर(निवृत्त मु.अ.)

गुंजोटी हे तसे छोटे गाव × त्या काळात सुमारे चार ते पांच हजार वस्तीचे गाव असेल हे× पण निझाम शासनाने यास **÷पायगा’** हा दर्जा दिला. पायगा म्हणजे आजच्या स्थितीतील जिल्ह्याचे ठिकाण× या जिल्ह्यात ६ तालुके होते. गुंजोटी, लोहारा, राजेश्वर(कर्नाटक), शहाबाद (कर्नाटक), भालकी (कर्नाटक) व नरसापूर(तेलंगणा) यांचा समावेश या पायगामध्ये होता. तालुका दर्जाचे न्यायालय नळदुर्ग येथे तर जिल्ह्याचे न्यायालय शहाबाद येथे होते. स्वातंत्र्य मिळेपर्यंत ही रचना होती. अर्थात् १९४८ पर्यंत ×

गुंजोटी गावाच्या मध्यातून भोगावती नदी वाहते. नदीच्या दक्षिणेस मूळ गाव तर उत्तरेस पेठ. बऱ्याच वेळा पाऊस जास्त झाला की गाव व पेठ यांचा संपर्क तुटायचा. अशा ह्या छोटेखानी गावाने दैदीप्यमान इतिहास घडविला. नदीमुळे या गावाची शोभाच न्यारी. तसा या नदीचा उगम फार दूर नाही. जवळपास वीस किलोमीटर अंतरावर × पण या नदीनेच जीवन दिले व या सरितेनेच इतिहास घडविला. नदीच्या खळखळत्या स्फटिकासारख्या स्वच्छ पाण्यात डुंबताना वेगळाच आनंद मिळायचा× गुरुवारच्या दुपारच्या सुट्टीनंतर व रविवारी अंघोळीसाठी व कपडे धुण्यासाठी येणाऱ्या युवकांची प्रचंड गर्दी असायची. नदीच्या पात्रात ठिकठिकाणी डोह होते. नदीच्या दुतर्फा शिंदीच्या झाडाची दाटी, जणू जंगलच. पाण्याकडे झुकलेल्या झाडांवरून मुले पाण्यात उड्या मारून पोहत असत. कितीतरी तास, मनमुराद पोहणे चाले. कपडे धुण्यासाठी येणाऱ्या माता-भगिनींचीही तेवढीच गर्दी असे. सकाळ-संध्याकाळ शेताकडे जाणाऱ्या व येणाऱ्या गाई-म्हशी व बैलांच्या झुंडीच्या झुंडी जायच्या. धनगर आपल्या शेळ्या-मेंढ्याचे कळप आणायचे, पण ते पाण्यात जायला तयारच नसायचे. मग तो मेंढपाळ एक मेंढीस उचलून पाण्यात टाकायचा. हे पाहिले की बाकीच्या मेंढ्या बिनबोभाट पाण्यात शिरायच्या× हे पाहतांना खूप गंमत वाटायची.

पावसाळ्यात नदीला पूर आला की गावाचा संपर्क तुटायचा. गावच्या भोवताली ठिकठिकाणी चिखलाचे डेरे पडायचे. ते दहा-पंधरा फूट खोल असायचे. गावाच्या भोवताली कसगी, कंटेकूर, कदेर, भुसळी, औराद, चिंचोली,

पळसगाव, वाडी अशी छोटी-छोटी गावे, तेथून येणाऱ्यांची या डेऱ्यांमुळे त्रेधातिरपिट उडायची. गावच्या भोवताली चांगली वनराई होती. यामुळे दुरून गाव दिसतच नव्हते. लिंब, चिंच, बाभूळ, आमराई, पेरू, जांभूळ, रिठा, वड, पिंपळ, शिकेकाई यांची रेलचेल होती. निसर्गाने भरभरून दिलेले हे वैभव विलक्षण ×

गावात सर्व जाती-जमातीचे लोक, ब्राह्मण, मराठा, लिंगायत, मुसलमान, ढोर, चांभार, कोष्टी(विणकर), भावसार, महार, मातंग, सुतार, लोहार, गुजर अशा अठरापगड सर्व जाती× सर्वांची संख्या जवळपास समसमान, कोण्याही एका जातीचे बाहुले नव्हते. आमच्या गावातल्या सारखा जातीय सलोखा तसा दुर्मीळच× कांही श्रीमंत, मातब्बर व रसिक मंडळीही होती. यात शेठ शिवलालचंद यांचा विशेषत्वाने उल्लेख करावासा वाटतो. यांनी दुरुन खास कारागीर आणून गावात प्रशस्त तीन मजली अशी अतिशय देखणी इमारत बांधली होती. क्षेत्र सुमारे दहा हजार चौरस फुटांपेक्षा अधिक असावे. या इमारतीत अतिशय महागडे व सुंदर टाईल्ज्स बसविले होते. भिंतीसाठी त्याचा वापर करण्यात आला होता. आत प्रवेश करताच सुंदर कारंज्याची योजना केली होती. संबंध घरात व परिसरात जनरेटरच्या साहाय्याने विजेची व्यवस्था केली होती. घराच्या भोवताली लक्षवेधी झाडे लावलेली होती. घराभोवतीच्या संरक्षक भिंतीस जोडून प्राणी संग्रहालय बनविले होते. त्यात अनेक प्रकारचे प्राणी ठेवण्यात आले होते. हे सर्व पाहण्यासाठी लोक दुरून खास बैलगाड्यांनी यायचे.

घरापासून शेतापर्यंत छान खडी रस्ता (मेटल रोड) बनविला होता. शेतात जाण्यासाठी एक महाद्वार ठेवले होते. सडकेच्या दुतर्फा झाडे. शेताच्या महाद्वारातून आत प्रवेश झाला की, दुतर्फा मेंदीच्या झाडांची दाट रांग व त्यांच्या पाठीमागे आंब्याची झाडे. हा रस्ता विहीरीपर्यंत होता. रस्ता जेथे संपायचा, त्या ठिकाणी रक्षक(पहारेकरी) असायचा. त्याला नारळाच्या बुंध्यापासून कोरून बनविलेली कुटी होती. विहिरीच्या दक्षिणेस महाल होता. महालाची उत्तर भिंत हीच विहीरीची दक्षिण भिंत होती. हा महाल म्हणजे ÷पाणी महाल' होता. महालाच्या वर मोट ओढण्यासाठीची व्यवस्था होती. पाण्याने भरलेली मोट वर चालली की पाण्याचे सारखे तुषार उडायचे. हे दृश्य पाहिल्याशिवाय यातली मौजच कळणार नाही. या महालाच्या पूर्वेला एक हौद होते. त्यात कारंजे व पाहण्यासाठी प्रेक्षा कक्ष अशी रचना होती. भोवताली गुलाबाची बाग होती. किमान वीस प्रकारचे तरी गुलाब असावेत. पश्चिमेला चिकूचा

बाग, त्याच्या दक्षिणेला मोसंबी, त्याला जोडून पेरू, सुगंधी सूर अशा विविध फळझाडांच्या बागा होत्या. ही बाग ÷**लालबाग**' या नावाने प्रसिद्ध होती. परिसरात असे उद्यान व असा महाल कोठेच नव्हता. गुंजोटीचे हे एक आकर्षण, त्या काळातील वास्तुशास्त्राचा एक उत्कृष्ट नमुना म्हणजे तो शहांचा वाडा× तो विहिरीतील पाणी महाल आणि ते उद्यान× यामुळे अगदी दूरपर्यंत गुंजोटीचे आकर्षण होते.

शहांच्या या शाही वाड्याच्या दक्षिणेस रस्त्याच्या विरुद्ध बाजूस काही पावलांच्या अंतरावर मशीद होती. मशिदीच्या दक्षिणेस हनुमानाचे मोठे मंदिर होती. या मंदिरात पाच फुटी हनुमानाची मूर्ती होती. दर्ग्याच्या उत्तरेस रस्त्याच्या विरुद्ध बाजूस स्व.माणिकसिंह चौहान यांचे घर होते. माणिकसिंहजी चौहान हे माणिकसिंग गुरुजी म्हणून ओळखले जायचे. उत्कृष्ट बांधा, पिळदार मिशा अगदी भारदस्त × माणिकसिंग गुरुजी हे स्वातंत्र्यसैनिकही होते. हैदराबाद मुक्तिसंग्रामात त्यांचे मोठे योगदान होते. त्यांच्या घराजवळच आणखी एक घर श्री माधवराव गायकवाड यांचं× स्व.माधवरावजी मिलटरीत मेजर होते. त्यांचा दुसऱ्या महायुद्धातही सहभाग होता. सैनिक म्हणून यांची कामगिरी फार मोठी × त्यांचे बंधू सुदामरावजी हे भारतीय सैन्यात होते. गुंजोटी गाव जसं स्वातंत्र्यसैनिकांचे गाव आहे, तसेच भारतीय सैन्याचेही गाव आहे. भीमराव जाधव, बसवंत गायकवाड, अंबादासराव कटकधोंड, लक्ष्मण इनामदार, गुंडेराव, झिंगाडे, नरसिंगराव सूर्यवंशी, चंद्रशेखर स्वामी अशी किती जणांची नावे सांगावीत? विशेष म्हणजे हे सर्व वेगवेगळ्या समाजातले लोक×

माणिकसिंग गुरुजींच्या घराजवळ स्व.जिलानी आणि स.दाऊद खाँ यांची घरे होती. गुंजोटीच्या चळवळीच्या इतिहासात यांचाही वाटा आहे. यांच्या घराच्या पूर्वेला रस्त्याच्या विरुद्ध बाजूस गवंड्यांची घरे. यात गंगाराम आयनलेंचा विशेष उल्लेख एक निर्भीड स्वातंत्र्य सैनिक म्हणून करावा लागेल× आणि याच भागातील चौक ÷**वेदप्रकाश चौक**' म्हणून ओळखला जातो व तसे नामाभिधानही करण्यात आले आहे. यांचा स्वातंत्र्यलढ्याशी असलेला संबंध पुढे पाहणार आहोत. याच भागात विरुपाक्षय्या स्वामी एक चांगले गायक व स्वातंत्र्य सैनिकही× याच मार्गाने पुढे गेले की, एक बारव विहीर आहे. याच्या जवळच उल्लेखनीय स्वातंत्र्य सैनिक होते बसप्पाजी आगसे× हे स्वातंत्र्यानंतरही गोवध बंदी आंदोलनातही सहभागी होते. याच भागात आणखी एक उल्लेखनीय व्यक्तिमत्त्व होते, त्यांचे नाव होते टोपणप्पाजी बबले× उत्तम

बांधा, डोक्यावर नेहमीच पागोटे, भारदार मिशा हे गुंजोटीचे फारच संतुलित व्यक्तिमत्त्व × अतिशय कणखर × खरे तर गुंजोटीसाठी हे सरदार वल्लभभाईंच होते. गावाच्या पूर्व भागात असेच एक व्यक्तिमत्त्व होते कंठप्पाजी देशमुख× संतुलित व्यक्तिमत्वांपैकी हे एक व्यक्मितत्व. गावाच्या याच भागात स्वातंत्र्य सैनिक व भारतीय सैनिकही होते, त्यात उल्लेखनीय म्हणजे शिवरुद्रच्या स्वामी. हे चांगले गायक व चांगले कलाकार पण होते. यांची नारदाची भूमिका अविस्मरणीय× हे स्वातंत्र्य सैनिकही होते.

गुंजोटी गावाच्या उत्तरेस गावाचा प्रवेश. पूर्वी येथे कमान होती. कमानीतून (प्रवेशद्वार) आत प्रवेश झाला की, येथे चार रस्ते फुटतात. एक पूर्वेस, दुसरा पश्चिमेस, तिसरा पूर्व बाजूने दक्षिणेस व चौथा प्रश्चिम बाजूने दक्षिणेस जाणारा. येथेच मुस्लिम बांधवांचे प्रार्थनास्थळ होते. उत्तरेस असे हे तसेच दक्षिणेसही गावात प्रवेश करताच दिसणारे हे प्रार्थना स्थळ× याच्या पाठीमागेही या गावचा फार मोठा इतिहास दडलेला आहे. या स्थळास थोर इतिहासकार बाबासाहेब पुरंदरे यांनीही भेट दिली. येथील एक फार मोठी प्राचीन मूर्ती× पुरंदरेच्या इच्छेनुसार आम्ही ती पुरंदरेंना भेट दिली. या प्रार्थना स्थळास जोडून पश्चिमेकडील रस्त्यावर माळगे, शहा यांचे वाडे× यांचाही गुंजोटीच्या इतिहासात उल्लेख करावा लागेल. गावाच्या प्रवेशद्वाराजवळ असलेल्या या प्रार्थनास्थळा जवळच मणगिरे यांचा वाडा. हा वाडाही इतिहासाचा साक्षिदार व सहभागादारही आहे. गावाच्या प्रवेशद्वाराजवळ प्रश्चिमेचे पहिले घर इनामदार(तांबटकर) यांचे× या घराने व घरातून अनेकांनी पोलिस ॲक्शनची कार्यवाही प्रत्यक्ष आपल्या डोळ्यांनी पाहिली; अपूर्व ×

गावात प्रवेश करताच जे प्रार्थनास्थळ होते. त्या ठिकाणी आज आर्यसमाज या संस्थेची इमारत आहे. आणि या इमारतीच्या पश्चिमेला अगदी विरुद्ध बाजूस एक घर होते. हे घर दिगंबरराव देशमुखांचे. गुंजोटीच्या इतिहासातील हे आणखी एक अलौकिक व्यक्तिमत्त्व × या सर्वांची माहिती जाणून घेऊ या पुढील भागात...×

-३६,÷यज्ञ', इंद्रप्रस्थ सह. गृह.संस्था,
गजानन मंदिर परिसर,
गारखेडा औरंगाबाद
मो.९४२३१७८८०३

अंक प्राप्तीसाठी....

सर्वांनाच वैदिक गर्जना मासिकाचे अंक दर महिन्याला न चुकता पाठविले जातात. पण बऱ्याच जणांना ते मिळत नसल्याच्या सूचना आल्या आहेत. तरी आपणास विनंती की, जर अंक न मिळाल्यास आपण त्वरीत आम्हास कळविणे. जेणेकरून पुन्हा ते अंक आपणास पाठविता येतील. - संपादक

मृत्युंजयी व्हा, मरणाला जिंका

- प्राचार्य वेदमुनी वेदालंकार

÷मरणाला जिंका, मृत्युंजयी व्हा' हे म्हणणं सोपं आहे, पण हे शक्य आहे का ? मरण चुकविता येईल का ? कुणाला तरी ते चुकले आहे का ? जो जन्मतो, तो मरतो आणि जो येतो, तो जातो × जगाचा हा अपरिहार्य नियम आहे. यातून कुणाची सुटका नाही. मृत्यू भीषण आहे, अति भीषण आहे. याच्या तावडीतून राजे-महाराजे, गरीब-श्रीमंत, विद्वान-निरक्षर कोणी आजपर्यंत सुटले नाहीत. मृत्यूची घटका आली की भले-भले पराक्रमी व शूरवीर हतबल होतात. वेदना आणि भयाने व्याकूळ होतात. सर्व उपायांनी मरण टाळायचा प्रयत्न करतात, पण नाही × कुणीही त्याला टाळू शकत नाही, हे प्रत्यक्ष सत्य आहे.

मग शास्त्रकार जे सांगतात की ÷मृत्युंजय व्हा', ÷मरणाला जिंका' या म्हणण्याला काय अर्थ आहे ? मरण अटळ आहे, पण त्याचे दु:ख टाळता येण्यासारखे आहे, असा त्याचा अर्थ आहे. माणसाला मरतांना किंवा मृत्यूला समोर पाहून दु:ख का होते ? हे माझे उंच-उंच घर, ही लांबच लांब शेते, ही माझी लाडकी बायको, ही प्रिय नातवंडे... या सर्वांना सोडून जावे लागत आहे' ही वेदना मनाला व्यथित करीत असते. या सर्व जड-चेतनांशी आपण आपलेपणाचे ममत्वाचे नाते जोडलेले असते. ती नाती तुटत आहेत, माझा सर्वांहून प्रिय हा देह देखील सोडावा लागत आहे. ही जाणीव कष्ट देत असते. इथे ममत्व हे दु:खाचे कारण आहे. लक्षात घ्या - जिथे ममत्व नाही, तिथे किंवा त्याविषयी दु:ख होत नाही. ÷अमेरिकेत विमान अपघात झाला, ४०० माणसे दगावली' ÷सुनामी लाटांमुळे लाखो माणसे मृत्युमुखी पडली×' ही बातमी आपल्याला व्यथित करते का ? प्रामाणिकपणे सांगायचे तर ÷नाही×' कारण, कोण-कुठली ती माणसे ? आमच्याशी त्यांचे सुख-दु:खाचे कांही धागे जुळलेले नव्हते, पण आपल्या घरातील कोणी प्रिय व्यक्ती दगावल्यास आपल्यावर दु:खाचा डोंगर कोसळतो. कारण त्याच्याविषयी ÷माझा', ÷मी' हे ममतेचे नाते बांधलेले होते. कुण्या मित्राने आमच्याकडे कांही काळ ठेवण्यासठी काही रक्कम दिली, तर आम्ही ठेवतो आणि काही काळानंतर त्याने ती रक्कम मागितल्यावर त्याला परत देतो. या व्यवहारामध्ये रक्कम घेतांना सुख अथवा आनंद नाही आणि देतांना अथवा परत करतांना दु:ख वेदना होत नाहीत. का ?

कारण की त्या धनाविषयी आम्ही कधीच आपलेपणाचे नाते जोडले नव्हते. ÷कुणाचे तरी आहे, कुणी तरी घेऊन जाईल' ही वृत्ती होती. माझे मी पण नव्हते. त्यामुळे दुःख नाही. मृत्यूच्या वेळी नेमकी हीच ममत्ववृत्ती आपणांला व्यथित करते. ही सर्व संपदा, ही पत्नी, ही लेकरे, ही माडी माझी आहेत. हा देह अत्यंत प्रिय आहे. हे सर्व सुटत असतांना मरण अधिकच अप्रिय, क्लेशकारक आणि भीषण वाटते.

या चर्चेतून ÷मृत्युंजयी' व्हायचे, मरणाला जिंकायचे कसे? या प्रश्नाचे उत्तर आपणांला वेदशास्त्रात सापडते. मरणाला जिंका म्हणजे मोह आणि ममत्व टाळा× सोडता येईल, तर सोडा× हजारो माणसे सुनामी प्रलयात मेली, तेंव्हा आम्ही रडलो नाही कारण त्यांच्याविषयी ममत्व नव्हते. वेदातील मृत्युंजय मंत्र सर्वांना परिचित मंत्र आहे-**÷त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । ऊर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।'**

हे त्र्यंबकेश्वरा× मला मृत्यूपासून वाचव. पण कसे ? त्याचे उत्तरही मंत्रात सांगितले आहे. ÷मृत्युपासून वाचव' म्हणजे मृत्युच्या वेळी आम्हांस होणाऱ्या किंवा पुढे येणाऱ्या दुःखापासून वाचव. परमेश्वरा× आम्हांस या शरीराच्या मोहापासून असे दूर कर की जसे वाळूक व टरबूज देठापासून आपोआप बाजूला होते. वाळूक किंवा टरबूज हे पिकले की आपोआप बाजूला होतात. त्यांना तोडावे लागत नाही. पण आम्ही पिकलो किंवा वृद्ध झालो. तरीही मोहपाशातून आपोआप दूर होण्याची आमची तयारी नाही. त्यामुळे मृत्युचे दुःख सोसावे लागते. अनेक बलिदानी मरणाला कसे सामोरे गेले? ते लक्षात घ्या. सरदार भगतसिंग हसत-गात फासावर गेले. महात्मा बुद्ध, स्वामी दयानंद, आचार्य विनोबा भावे आदी अनेकानेक ध्येयवादी माणसे यांनी वय, संपत्ती, अधिकार आदी सर्वांना लाथ मारुन आनंदाने मरणाचा स्वीकार केला, हे सर्वज्ञात आहे. त्यांना मृत्यू हा भीषण, क्लेशकारी, दुःखदायी वाटला नाही, कारण महान ध्येयापोटी त्यांनी जगातील जडचेतनांचा मोह केव्हाच झुगारून दिला आहे.हिंदी संत कवी कबीरदास एके ठिकाणी म्हणतात-

जिन मरने से जग डरे, सो मेरे आनंद ।
कब मरिहौं कब देखिहौं,
पूरन परमानंद।।

ज्या मरणाला सर्व जग भिते, ते मरण माझ्याकरिता आनंदमय आहे. कारण मी तर वाट पाहत आहे की मी केंव्हा मरेण आणि परमानंद दशेत जाऊन आत्म्याला केंव्हा ईश्वरामध्ये विलीन करील ? देह हा या संत विदेह कवीला ईश्वरापासून दूर ठेवणारे भिंत वाटते. हेच आहे मृत्यूला जिंकणे, हेच आहे मृत्यूंजयी होणे.

जीवनात माणसाला मोह-माया सतावीत असते. पण मृत्यू जवळ आल्यानंतर किंवा वार्धक्य आल्यावर मोहाला कसा आवर घालता येईल? यासाठी माणसाने यत्न करावेत. आणि एके दिवशी मृत्यू दारात आल्यानंतर निर्मोही मनाने त्याचे स्वागत करावे. असे करणे अतिकठीण व अशक्यप्राय आहे, हे खरे, पण मृत्युंजयी होण्याचा हाच एकमेव मार्ग आहे. वाळकाप्रमाणे मोहापासून स्वत: दूर व्हा. याचेच दुसरे नाव ÷वानप्रस्थी व्हा', ÷विदेह जनक व्हा'.

– इंद्रधनु वृद्धाश्रम, चौरस्ता,
उमरगा जि.उस्मानाबाद
मो.९४२१९३३१५१

वार्ताविशेष

परळीत संस्कृत दिन समारंभ उत्साहात साजरा

बदलत्या परिस्थितीत माणसां-माणसात रुंदावत चाललेली दरी कमी करणारा व एकमेकांना जोडणारा सर्वाधिक उपयुक्त सेतू म्हणजे संस्कृत भाषा होय. या भाषेतील ज्ञानाने व मूल्य संस्कारांनी आदर्श माणूस घडतो, असे उद्गार मराठवाडा शिक्षक संघाचे अध्यक्ष श्री पी.एस.घाडगे यांनी काढले.

परळी येथील आर्य समाज सभागृहात नुकताच ÷सामूहिक संस्कृत दिन' साजरा करण्यात आला. या समारंभात प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री घाडगे बोलत होते. अध्यक्षस्थानी आर्यसमाज संस्थेचे सचिव श्री उग्रसेन राठौर होते. तर संस्कृतचे गाढे अभ्यासक पं.शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर-उ.प्र.), माजी नगराध्यक्ष जुगलकिशोर लोहिया, न.प.शिक्षण सभापती गोपाळ आंधळे, नगरसेवक जयपाल लाहोटी, पं.प्रदीप आर्य, धम्मानंद मुंडे, जी.एस.सौंदळे आदींची यावेळी प्रमुख उपस्थिती होती. याप्रसंगी संस्कृत श्लोकगायन व संस्कृत भाषण स्पर्धेतील विजेत्या विद्यार्थ्यांना पुरस्कारांचे वितरण करण्यात आले. या स्पर्धांमध्ये परळी शहरातील जवळपास २०० विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदविला. हे सर्व पुरस्कार दिवंगत संस्कृत प्रेमी व आर्य समाजाचे आधारस्तंभ स्व.नंदलाल लाहोटी यांच्या स्मरणार्थ लाहोटी परिवाराच्या वतीने देण्यात आले. तसेच यावेळी संस्कृत भाषेच्या प्रचार व प्रसार कार्यात मोलाचे योगदान देणाऱ्या संस्कृत शिक्षकांचा व कार्यकर्त्यांचा गौरव करण्यात आला. प्रास्ताविक प्रा.अरुण चव्हाण, पाहुण्यांचा परिचय प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री, तर सूत्रसंचलन सौ.उज्वला कत्ते व प्रा.उत्तम नरवाडकर यांनी केले.

निवघा आर्य समाजाच्या नव्या वास्तूचे उद्‌घाटन संपन्न

जीवनात शाश्वत सुख व आत्मिक आनंद मिळवावयाचा असेल, तर प्रत्येक माणसाने आर्य समाजाच्या कल्पवृक्ष छायेचा आश्रय घ्यावा, असे आवाहन वेदप्रचारक श्री पं.जयेंद्र शास्त्री यांनी केले. हदगांव तालुक्यातील **÷प्रसिद्ध आर्य समाज'** म्हणून ओळख असलेल्या निवघा (बाजार) येथे नव्याने बांधण्यात आलेल्या आर्य समाजाच्या इमारतीचे उद्‌घाटन दि.११ ऑगस्ट २०१७ रोजी संपन्न झाले. त्यावेळी ते प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी पंचायत समितीचे माजी सभापती श्री बालासाहेब कदम होते. उपसरपंच श्री संदीपराव कदम व इतरांच्या हस्ते या नूतन इमारतीचे वैदिक मंत्राच्या उद्‌घोषात उद्‌घाटन करण्यात आले. यावेळी आयोजित यज्ञात विविध यजमानांनी सपत्नीक सहभागी होऊन श्रद्धेने आहुत्या प्रदान केल्या.

आर्य कार्यकर्त्यांच्या अविरत परिश्रमाने १६'x३०' या जागेत आर्य समाजाची नवीन वास्तू उभारण्यात आली आहे. गेल्या ८ महिन्यांपासून या इमारतीचे बांधकाम प्रगतीपथावर होते. यासाठी अनेक दानदात्यांनी मोठ्या प्रमाणावर निधी दिला आहे. उद्‌घाटन कार्यक्रमांमध्ये या सर्व दानदात्यांचा आर्य समाजातर्फे स्मृतिचिन्ह व ग्रंथसंपदा प्रदान करून सत्कार करण्यात आला. यानिमित्त गावात तीन दिवस श्रावणी वेदप्रचाराचा कार्यक्रम घेण्यात आला. याकरिता प्रांतीय सभेतर्फे वैदिक विद्वान पं.जयेंद्रजी शास्त्री(ओरिसा) व आर्य भजनोपदेशक देवेंद्रजी आर्य (अहमदाबाद) यांना पाठविण्यात आले होते. या विद्वानांच्या उपस्थितीत सकाळी यज्ञ, प्रवचन व भजन तर रात्री देखील वेदप्रचाराचा कार्यक्रम झाला. यासोबतच गावातील विद्वान स्नातक प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शास्त्री, प्रा.सोमदेव शास्त्री व सौ.मधुमती शिंदे, डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनीही गावकऱ्यांचे प्रबोधन केले.

उद्‌घाटनदिनी आयोजित जाहिर कार्यक्रमास निवघा व परिसरातील आर्य कार्यकर्ते आणि गावकरी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते. माजी सभापती श्री बालासाहेब कदम, माजी पोलीस पाटील श्री गोविंदराव पाटील, उपसरपंच श्री संदीपराव कदम, प्रधान श्यामसुंदर कदम, मंत्री धोंडीराम शिंदे, उपप्रधान संभाजी कदम, उपमंत्री विजय कदम, कोषाध्यक्ष गणेशराव मुधोळ आदींनी कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी प्रयत्न केले. या बांधकामासाठी जवळपास ७ लाख रुपये खर्च आला असून याकरिता कार्यकर्त्यांनी अविश्रांत परिश्रम घेतले.

शिवाजी निकम व आर्य दांपत्यास ÷आर्यन् पुरस्कार’

दिल्ली येथील प्रसिद्ध दानशूर आर्य कार्यकर्ते ठाकुर श्री विक्रमसिंह आर्य व त्यांचे कुटुंबीय हे आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यात समर्पित भावनेने योगदान देणाऱ्या वैदिक धर्मी आर्य कार्यकर्त्यांचा दरवर्षी **÷आर्यन् पुरस्कार’** देऊन गौरव करतात. याहीवर्षी दि.१७ सप्टेंबर रोजी हा कार्यक्रम घेण्यात आला. या सत्कारमूर्तींमध्ये महाराष्ट्रातील मोगरगा (ता.औसा जि.लातूर) येथील वेदप्रचारक श्री शिवाजी किशनराव निकम व अंबाजोगाई (जि.बीड) येथील सक्रिय आर्यदांपत्य श्री वसिष्ठ व सौ.सरस्वती आर्य यांचा समावेश आहे. दिल्लीतील डिफेन्स कॉलनी आर्य समाजामध्ये आयोजित भव्य सत्कार समारंभात वरील तिघांना आर्यन पुरस्कार प्रदान करण्यात आले. श्री शिवाजी निकम व श्री वसिष्ठ आर्य यांना प्रत्येकी ११ हजार रुपये तर सौ.सरस्वती आर्य यांना ५ हजार रुपयांचा गौरवनिधी आणि तिघांनाही शाल, श्रीफळ व वैदिक साहित्य प्रदान करून गौरविण्यात आले.

श्री निकम हे गेल्या ४० वर्षांपासून मोठ्या तळमळीने ग्रामीण भागात आर्य समाजाचा प्रचार करतात. ठिकठिकाणी यज्ञ, विविध संस्कार, भजन व प्रवचन यांच्या माध्यमाने वैदिक विचार तळागळातील सामान्य जनतेपर्यंत पोहोचविण्याकरिता ते अहर्निश प्रयत्नशील आहेत. स्वत:च्या मोगरगा गावातही आर्य समाजाचे संवर्धन व संरक्षण करण्यात ते आघाडीवर आहेत. महाराष्ट्र सभेच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात ते दरवर्षी सहभागी होतात.

अंबाजोगाईचे सौ.सरस्वती व श्री वसिष्ठ आर्य हे आर्य दांपत्य गेल्या ५० वर्षांपासून महर्षी दयानंदांचे वैदिक तत्त्वज्ञान अंगिकारून त्याच्या प्रसार कार्यात सर्वतोमना संलग्न आहेत. स्वत:सह आपल्या मुला-मुलींचे मनुष्यकृत जात-पात तोडून विवाह झाले असून आर्य समाजाच्या प्रचारकार्यात ते अग्रणी आहेत. श्री वसिष्ठ आर्य हे अध्यापन सेवेतून निवृत्त झाल्यानंतर शहर व गावोगावी शाळा-महाविद्यालयात विद्यार्थ्यांचे प्रबोधन करतात, तर वैदिक साहित्य विक्रीचे ही कार्य करतात.

या तिन्ही गौरवमूर्तींचे आर्य समाजाच्या वतीने हार्दिक अभिनंदन व शुभेच्छा...×

शोकवार्ता श्रीमती वासंती वाघमारे यांचे निधन

थोर क्रांतिकारी आर्य नेते पं.शेषरावजी वाघमारे यांच्या द्वितीय स्नुषा श्रीमती वासंती शरदचंद्रजी वाघमारे यांचे दि.४ ऑगस्ट २०१७ रोजी दुपारी अल्पशा आजाराने पुणे येथे दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ७१ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे एक मुलगा, दोन मुली, सुन, जावई, नातवंडे असा परिवार आहे. श्रीमती वाघमारे गेल्या दीड वर्षांपासून रक्ताच्या कर्करोगाने आजारी होत्या. त्यांच्यावर पुण्यातील एन.सी.सी. सैनिकी रुग्णालयात उपचार चालू होते. त्यांच्या पार्थिवावर दि.६ ऑगस्ट रोजी पुणे औंध परिसरातील विद्युत दाहिनीत अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार यांनी वैदिक अंतिम संस्कारांचे मंत्रपठण केले. सभेचे मंत्री माधवराव देशपांडे यांच्यासह आर्य समाजाचे कार्यकर्ते यावेळी उपस्थित होते.

वैजनाथराव वावधाने काळाच्या पडद्याआड

किल्लेधारुर येथील आर्य समाजाचे जुने-जाणते वयोवृद्ध कार्यकर्ते व पुरोहित पं.वैजनाथराव दगडोबा वावधाने यांचे बधुवार दि.४ऑक्टोबर रोजी सायंकाळी ६.१५ वा. वृद्धावस्थेने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९०वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी सौ.कलावतीबाई, दोन मुले वेदभूषण व रविंद्र, सुना सौ.अंबिका व सौ.निलम आणि नातवंडे चि.आदित्य, चि.रूपेश, कु.वैष्णवी, कु.श्रावणी, कु.कार्तिकी व कु.वैभवी आणि सहा भाऊ असा परिवार आहे.

श्री वावधाने हे वैदिक विचारांचे कट्टर पुरस्कर्ते आणि स्वामी दयानंदांचे एकनिष्ठ व कर्मठ अनुयायी होते.अगदी प्रारंभापासूनच त्यांनी आपली दिनचर्या सुव्यवस्थित ठेवली होती. आर्य समाजाचे माजी पुस्तकाध्यक्ष म्हणूनही त्यांनी काम पाहिले आहे. त्यांच्या पार्थिवावर पं.भारत कापसे यांच्या प्रमुख पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी प्रधान प्रमोदकुमार तिवारी, मंत्री अॅड.प्रमोद मिश्रा, कमलाकर इंदुरकर, उद्धव खाडे, काशीनाथराव चिंचाळकर यांच्यासह गावातील प्रतिष्ठित मंडळी उपस्थित होती.

स्वा.सै.तुकारामपंतजी गंजेवार (कपिलमुनी) यांचे धर्माबाद येथे दि.२९.०९.१७ रोजी दुःखद निधन×
(...विस्तृत वार्ता पुढील अंकात)

वरील दिवंगतांना म.आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाजातर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली×

ग्रन्थ विमोचन

श्री नारायण कुलकर्णी द्वारा मराठी अनूदित ÷पं.नरेन्द्र जीवनी’ का विमोचन करते हुए पं.आनन्दजी पुरुषार्थी, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, लेखक एवं अन्य ।

भवन उद्घाटन

आर्य समाज निवघा बाजार (ता.हदगांव) के नये भवन के उद्घाटन अवसर पर यज्ञ करते हुए यजमान आर्य दम्पती एवं महिलाएँ।

आर्य समाज निवघा व शिन्दे परिवार की ओर से स्कूली छात्रों को अध्ययनसाहित्य का वितरण करते हुए प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शास्त्री।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली–वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

जीवेत् शरदः शतम् !

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज, परली–वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**
की ओर से **वैदिक गर्जना** मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

स्व.श्री.सदाशिवरावजी गुट्टे

श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे